G20 भारत 2023 INDIA

आज़ादी का अमृत महोत्सव

वसुधैव कुटुम्बकम्
ONE EARTH • ONE FAMILY • ONE FUTURE

टीएचडीसी

पहल

राजभाषा गृह–पत्रिका

अंक: 31
जुलाई–दिसंबर
2022

टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड
THDC INDIA LIMITED

हिंदी दिवस के अवसर पर अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक की अपील

हिंदी दिवस के पावन अवसर पर टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड परिवार को मेरी हार्दिक शुभकामनाएं ।

हिंदी दिवस के इस पावन अवसर पर यह सोचना उचित होगा कि भाषा किसी राष्ट्र के ध्वज के समान उस राष्ट्र की एकता, अखंडता, सहिष्णुता, संवेदनशीलता और संप्रेषणीयता की संवाहक होती है। भाषा की महानता इसी में है कि वह जन–जन की सामान्य बोलचाल की भाषा बनने के साथ ही सरकारी कामकाज में आसानी से प्रयुक्त की जा सके। राजभाषा हिंदी राष्ट्र की इन सभी अपेक्षाओं एवं आकांक्षाओं पर खरी उतरती है तथा यह हमारे बहुभाषा–भाषी देश की सांस्कृतिक एवं सामाजिक समरसता को एक सूत्र में पिरोती है ।

सर्वविदित है कि राष्ट्र के नव–निर्माण में हिंदी की महति भूमिका रही है । स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद 14 सितंबर, 1949 को जब संविधान सभा ने हिंदी को राजभाषा के रूप में स्वीकार किया तो इसका संवैधानिक एवं प्रशासनिक दायित्व और अधिक बढ़ गया। इस दिवस की स्मृति में प्रत्येक वर्ष 14 सितंबर को ''हिंदी दिवस'' मनाया जाता है। आज 'हिंदी' राजभाषा, संपर्क भाषा और विश्वभाषा के रूप में अपने अस्तित्व का विस्तार कर रही है। भारत सरकार के कार्यालयों के साथ–साथ सार्वजनिक क्षेत्र उपक्रमों में हिंदी का प्रयोग तेजी से बढ़ रहा है ।

राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय ने भली–भांति विचार करते हुए यह नीति बनाई गई है कि सरकारी कार्यालयों में हिंदी का प्रयोग प्रेरणा, प्रोत्साहन एवं सद्भावना से बढ़ाया जाए । इस नीति के तहत राजभाषा विभाग ने बारह 'प्र' की रणनीति पर कार्य प्रारंभ कर दिया है, जिसके प्रमुख स्तंभ हैं– प्रेरणा, प्रोत्साहन, प्रेम, प्राइज, प्रशिक्षण, प्रयोग, प्रचार, प्रसार, प्रबंधन, प्रोन्नति, प्रतिबद्धता और प्रयास। राजभाषा विभाग के द्वारा की गई यह पहल वास्तव में एक अभिनव प्रयास है जिससे संस्थानों को एक नई दिशा मिलेगी तथा वे राजभाषा हिंदी में कार्य करने में आने वाली छोटी–मोटी परेशानियों से हतोत्साहित नहीं होंगे और अपने संस्थान में राजभाषा का कार्यान्वयन उत्साह एवं जोश के साथ सुनिश्चित करेंगे।

मेरा सभी यूनिटों/कार्यालयों के प्रमुखों एवं विभागाध्यक्षों से अनुरोध है कि उपर्युक्त बारह 'प्र' की रणनीति के अनुसार संस्थान के अधिक से अधिक कार्य को मूल रूप से सरल एवं सहज हिंदी में किया जाए। इसके साथ ही इस बात का भी ध्यान रखा जाए कि संस्थान में मूल पत्राचार एवं टिप्पणी लेखन के प्रतिशत में उत्तरोत्तर बढ़ोत्तरी होनी चाहिए। राजभाषा विभाग के द्वारा प्रत्येक वर्ष जारी किए जाने वाले वार्षिक कार्यक्रम में दिए गए लक्ष्यों को पूरा करने का भरसक प्रयास किया जाए तथा हिंदी के सभी कार्यक्रमों एवं गतिविधियों का आयोजन उत्साह एवं हर्षोल्लास के साथ किया जाए।

आप सभी को पुनः हिंदी दिवस की शुभकामनाएं।

जय हिंद !

राजीव विश्नोई

(राजीव विश्नोई)
अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक

निदेशक (वित्त) का संदेश

निगम की राजभाषा पत्रिका ''पहल'' के सभी पाठकों को नववर्ष–2023 की हार्दिक शुभकामनाएं। मुझे यह देखकर प्रसन्नता हो रही है कि निगम की यह पत्रिका हर बार नए कलेवर में प्रकाशित हो रही है तथा निगम के भीतर ही नहीं अपितु बाहर भी इसकी लोकप्रियता में निरंतर वृद्धि हो रही है। इसका पूरा श्रेय निगम के अधिकारियों एवं कर्मचारियों को जाता है जो अपनी लेखनी के माध्यम से इस पत्रिका को सजाने एवं संवारने का कार्य भी कर रहे हैं।

राजभाषा हिंदी के प्रति लोगों में सकारात्मक सोच विकसित हुई है जिसके परिणामस्वरूप सरकारी कामकाज में हिंदी के प्रयोग में बढोत्तरी हो रही है। निगम में राजभाषा हिंदी का कार्यान्वयन सुनिश्चित करने के लिए भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग के द्वारा प्रत्येक वर्ष जारी किए जाने वाले वार्षिक कार्यक्रम का अनुपालन सुनिश्चित करने के प्रयास निरंतर किए जा रहे हैं। इसी क्रम में कारपोरेट कार्यालय के साथ–साथ सभी यूनिट/कार्यालयों में राजभाषा कार्यान्वयन समिति की तिमाही बैठकों, तिमाही हिंदी प्रतियोगिताओं, हिंदी कार्यशालाओं का आयोजन तो नियमित रूप से किया ही जा रहा है, साथ ही कवि सम्मेलनों एवं अनेक सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन करते हुए अधिकारियों व कर्मचारियों को प्रोत्साहित करने का प्रयास भी किया जा रहा है।

निगम में राजभाषा हिंदी की सुदृढ़ होती स्थिति के दृष्टिगत राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार के द्वारा टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड को हरिद्वार एवं टिहरी की नगर राजभाषा कार्यान्वयन समितियों के संचालन का दायित्व भी सौंपा गया है। राजभाषा विभाग की अपेक्षानुसार इन समितियों की बैठकों एवं अन्य कार्यक्रमों का आयोजन करने, इन समितियों के अंतर्गत आने वाले केंद्र सरकार के कार्यालयों में राजभाषा कार्यान्वयन की समीक्षा करने एवं राजभाषा के क्षेत्र में सभी कार्यालयों व संस्थानों को एक सूत्र में पिरोकर रखने में टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड अपना भरसक प्रयास कर रही है। इन दायित्वों को देखते हुए निगम के प्रत्येक अधिकारी एवं कर्मचारी का दायित्व और भी अधिक बढ़ जाता है कि वे अपने दैनिक सरकारी कार्यों में अधिकाधिक हिंदी का प्रयोग करें और दूसरे संस्थानों के समक्ष अनुकरणीय उदाहरण प्रस्तुत करें।

नववर्ष की इस मंगल बेला पर मैं आपको पुनः नववर्ष की हार्दिक शुभकामनाएं संप्रेषित करता हूं तथा कामना करता हूं कि नूतन वर्ष 2023 आपको एवं आपके समस्त परिजनों के लिए सुख समृद्धिपूर्ण, मंगलमय तथा निरामय हो।

जे.बेहेरा

(जे.बेहेरा)
निदेशक(वित्त)

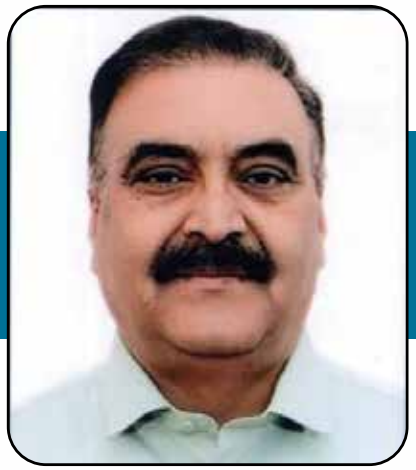

मुख्य महाप्रबंधक (मा.सं. एवं प्रशा.) का संदेश

टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड की राजभाषा पत्रिका ''पहल'' के माध्यम से सर्वप्रथम मैं आपको नए वर्ष के आगमन पर बहुत–बहुत शुभकामनाएं देता हूं और टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड परिवार के समस्त सदस्यों के उत्तम स्वास्थ्य एवं दीर्घायु जीवन की कामना करता हूं।

वर्ष 2022 लोगों के लिए बहुत परिवर्तनकारी सिद्ध हुआ। वर्ष 2020 एवं 2021 में महामारी के कारण लोगों के मन में अज्ञात भय का माहौल बन गया था, लोग स्वयं को बहुत मायूस एवं नितांत अकेला महसूस कर रहे थे, महामारी के प्रकोप के कम होते ही भारत सरकार ने लोगों को जोड़ने की अनेक पहल की। इनमें से एक पहल थी, आजादी का अमृत महोत्सव मनाया जाना। सरकार के आहवान पर पूरे देश में 12 मार्च, 2021 से आजादी के अमृत महोत्सव का शुभारंभ हुआ। यह देश की आजादी की 75वीं वर्षगांठ पर 75 सप्ताह को जश्न के रूप में मनाने की अनूठी पहल थी जिसके माध्यम से आजादी के बाद की विकास यात्रा एवं इस दौरान अर्जित की गई उपलब्धियों को उत्सव के रूप में मनाने का निर्णय लिया गया।

टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड में हालांकि, वर्ष 2021 में ही इस महोत्सव की शुरूआत हो गई थी और इसके तत्वावधान में अनेक कार्यक्रम आयोजित किए गए। वर्ष 2022 में यह महोत्सव 12 जुलाई, 2022 अर्थात निगम के स्थापना दिवस की तिथि से 15 अगस्त, 2022 तक आयोजित किया गया। इस कालखंड को एक उत्सव के रूप में मनाया गया। इसी उपलक्ष्य में निगम के कारपोरेट कार्यालय में गंगा भवन परिसर में 100 फीट ऊंचे राष्ट्रध्वज को पोस्ट किया गया तथा कालोनी परिसर में स्थित रसमंजरी हॉल में अनेक सांस्कृतिक कार्यक्रमों, नाटक मंचन, मूवी शो, कवि सम्मेलन का आयोजन किया गया। इनका आनंद कालोनी परिसर के सभी निवासियों ने उठाया। इस प्रकार के कार्यक्रम और गतिविधियां निगम की सभी यूनिटों में आयोजित की गई। इन गतिविधियों से लोगों में महामारी के कारण बन गए अपने आवरण से बाहर आने और आपस में मिल–जुल कर कार्य करने का माहौल प्राप्त हुआ और उनके जीवन में आई मायूसी और अकेलापन महसूस करने की प्रवृत्ति समाप्त हुई। सितंबर माह में निगम में हिंदी दिवस एवं हिंदी पखवाड़ा का आयोजन किया गया। इस दौरान निगम के अधिकारियों व कर्मचारियों के लिए विभिन्न हिंदी प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया जिनमें कर्मचारियों ने बढ़–चढ़कर प्रतिभागिता की।

ऐसी गतिविधियां लोगों को आपस में जोड़ने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं और इस जुड़ाव से उत्पन्न हुई टीम भावना राष्ट्र की भावी प्रगति में सहायक सिद्ध होती है। निगम की राजभाषा पत्रिका ''पहल'' भी लोगों को उनके भावों एवं विचारों के माध्यम से जोड़ने का प्रयास कर रही है। आइए ! हम सब मिलकर इस पत्रिका के सृजन में अपनी लेखनी के माध्यम से इसी प्रकार योगदान देते रहें।

(वीर सिंह)
मुख्य महाप्रबंधक (मा.सं. एवं प्रशा.)

संपादकीय

निगम की राजभाषा गृह पत्रिका ''पहल'' का दिसंबर 2022 अंक आपके सम्मुख प्रस्तुत करते हुए मुझे हार्दिक प्रसन्नता हो रही है। जब तक यह अंक प्रकाशित होकर आएगा तब नववर्ष 2023 का शुभ आगमन हो चुका होगा। अतः मैं इस अंक के माध्यम से पत्रिका के सभी पाठकों को नववर्ष की हार्दिक शुभकामनाएं संप्रेषित करता हूं।

हालांकि, आज इंटरनेट एवं आधुनिक मीडिया उपकरणों के प्रयोग ने कार्य करने के माहौल को परिवर्तित करने का भरसक प्रयास किया है। महामारी के कारण पिछले 02 वर्षों में डिजीटली कार्य को और भी अधिक प्रोत्साहन मिला है परन्तु अभी भी पत्र–पत्रिकाओं का महत्व कम नहीं हुआ है। इसका एक बड़ा कारण यह है कि पत्र–पत्रिकाओं में प्रकाशित होने वाली सामग्री तथ्यपरक होती है। इंटरनेट पर हिंदी की सामग्री का वैसे भी काफी अभाव है और हिंदी की जो सामग्री इंटरनेट पर उपलब्ध है भी, उसे सर्च करने में प्रयोगकर्ता काफी असुविधा महसूस करते हैं। इस बात को ध्यान में रखते हुए राजभाषा विभाग ने अपनी वेबसाइट rajbhasha.gov.in पर ई–पत्रिका पुस्तकालय खोला तथा जो संस्थान हिंदी की पत्रिकाओं का प्रकाशन करते हैं, उन्हें निर्देश दिए कि अपने संस्थान की हिंदी की पत्रिका की पीडीएफ राजभाषा विभाग की वेबसाइट पर भी अपलोड करें। राजभाषा विभाग द्वारा इसकी शुरूआत 2019 में की गई थी और अब तक 800 से भी अधिक पुस्तकें इस ई–पुस्तकालय में अपलोड हो गई हैं। इसके प्रयोगकर्ताओं एवं पाठकों की संख्या में भी धीरे–धीरे वृद्धि हो रही है। इस समय इस वेबसाइट पर 42967 हिट्स हुए हैं। राजभाषा विभाग के इस ई–पत्रिका पुस्तकालय की जोर– शोर से प्रचार–प्रसार करने की आवश्यकता है और मैं ऐसे सभी संस्थानों से यहां अपील करना चाहता हूं, जो भी राजभाषा पत्रिकाओं का प्रकाशन कर रहे हैं कि राजभाषा विभाग की इस प्रकार की पहल का प्रचार–प्रसार अपनी पत्रिकाओं के माध्यम से अवश्य ही करें।

टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड की राजभाषा पत्रिका ''पहल'' के प्रकाशन में हम राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार के द्वारा पत्रिका के प्रकाशन के संबंध में जारी किए गए दिशा–निर्देशों का अनुपालन करने का भरपूर प्रयास करते हैं और कोशिश करते हैं कि यह पत्रिका राजभाषा के प्रचार–प्रसार का माध्यम तो बने ही, साथ ही निगम के अधिकाधिक कर्मचारियों के भावों एवं विचारों के प्रसार का माध्यम भी बने। मुझे यह कहते हुए प्रसन्नता हो रही है कि निगम में अपनी लोकप्रियता अर्जित करने के साथ ही निगम से बाहर भी इस पत्रिका के पाठकों की संख्या में बढ़ोत्तरी हो रही है। यह हमें आपकी प्रतिक्रियाओं के माध्यम से पता चलता है। आपसे प्राप्त हुई प्रतिक्रियाएं हमें और आगे अच्छा करने की प्रेरणा देती हैं। जिससे इस पत्रिका का स्वरूप प्रत्येक अंक के साथ और अधिक मुखरित होकर सामने आता है। स्थानाभाव के कारण हो सकता है कि किसी व्यक्ति का लेख पत्रिका में प्रकाशित होने से छूट गया हो, क्योंकि मानकों के अनुसार हम प्रत्येक क्षेत्र को छूने की कोशिश करते हैं। अतः आपसे विनम्र अनुरोध है कि इस पत्रिका में अपने लेख, कविताएं, हास्य व्यंग्य आदि भेजना जारी रखें और राजभाषा हिंदी का मान बढ़ाते रहें।

(पंकज कुमार शर्मा)
उप प्रबंधक (राजभाषा)

पहल

हिंदी अनुभाग, मुख्यालय
टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड
की राजभाषा गृह पत्रिका (अंक-31)

मुख्य संरक्षक
श्री राजीव विश्नोई
अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक

संरक्षक
श्री जे. बेहेरा
निदेशक (वित्त)

मार्गदर्शक
श्री वीर सिंह
मुख्य महाप्रबंधक (मा.सं. एवं प्रशा.)

श्री ईश्वरदत्त तिग्गा
अपर महाप्रबंधक (मा.सं. एवं प्रशा.)

संपादक
श्री पंकज कुमार शर्मा
उप प्रबंधक (राजभाषा)

संपादन सहयोग
श्री नरेश सिंह
कनि. अधिकारी (हिंदी)

संपर्क सूत्र
संपादक
"पहल"
हिंदी अनुभाग, मुख्यालय
टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड
भागीरथी भवन, प्रगतिपुरम,
बाईपास रोड, ऋषिकेश–249201
उत्तराखंड

दूरभाष : 0135–2473614
ई–मेलः pankajksharma@thdc.co.in
thdchindi@gmail.com

पहल पत्रिका में प्रकाशित लेखकों के विचार उनके अपने हैं। इनसे टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड प्रबंधन का सहमत होना आवश्यक नहीं है ।

विषय सूची

लेख/प्रेरक प्रंसग/लघुकथा

1. देश के सांस्कृतिक विस्तार में हिंदी की भूमिका 5
2. भारतीय स्वाधीनता संग्राम में हिंदी की भूमिका 12
3. बिजली चोरी रोकने के लिए दंड का प्रावधान 14
3. नोएडा ट्विन टॉवर्स 15
4. सौर से शौर्य 17
5. आंवला के औषधीय गुण 19
6. कुछ टिप्पणियों के हिंदी पर्याय 20

कविताएं/क्षणिकाएं/विचार

7. जीवन में अब रंग तेरा है 22
8. अमर प्रेम 23
9. पूर्णिमा का चांद 23
10. मेकअप 24
11. तीन पहर जो बीत गए 24
12. आजादी 25
13. सेवानिवृत्ति – जीवन सफर में एक पड़ाव 25

राजभाषा गतिविधियां

14. हिंदी कार्यशालाओं का आयोजन 26
15. हिंदी पखवाड़ा का आयोजन 29
16. टीएचडीसी लेडीज वेलफेयर ने भी मनाया हिंदी दिवस 35
17. हिंदी संगोष्ठी का आयोजन 35
18. तिमाही प्रतियोगिताओं का आयोजन 35
19. कवि सम्मेलन का आयोजन 36
20. नराकास हरिद्वार की 34वीं अर्धवार्षिक बैठक 38
21. नराकास टिहरी की 24वीं अर्धवार्षिक बैठक 39
22. संपादक के नाम पाती 39
23. हास परिहास 40

देश के सांस्कृतिक विस्तार में हिंदी की भूमिका

खंड–खंड इतिहास में अखंड हिंदी

लेख

यतीन्द्र नाथ चतुर्वेदी
सदस्य – हिंदी सलाहकार समिति,
केंद्रीय संस्कृति और नवीन एवं नवीकरणीय ऊर्जा मंत्रालय, भारत सरकार
3/16, कबीर नगर, दुर्गाकुण्ड, वाराणसी – 22100, उत्तर प्रदेश

भारत विमर्शों का देश है। आरण्यक संस्कृति, वैदिक अथवा पौराणिक कालखंड रहा हो, प्रत्येक कालखंड अपने–अपने विमर्श रखते रहे हैं। हमारे ऋषि–मुनि साहित्य के रचयिता रहे हैं। अपने मूल से जो लोग शक, तातारी, हूण, मंगोल आदि थे और आक्रमणकारियों के अस्तित्व में विदेशों से आये थे, अपनी पहचान खोकर, हिन्दुस्तानियों के साथ घुल–मिल जाने के कारण उनका विदेशीपन विलुप्त हो गया और वे विशुद्ध भारतीय समझे जाने लगे। हिंदी साहित्य के इतिहास की परतों को कुरेदें तो भारत की बुनियाद में अतीत इतिहास के संस्कृत के साथ ही जैन, बौद्ध, सिख, मुस्लिम आदि साहित्य मिलेंगे।

19वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में देवनागरी आंदोलन ने जब हिंदी आंदोलन का नाम ग्रहण कर लिया, देहलवी और उर्दू जैसे शब्दों से बचने के लिये हिंदी के विद्वानों ने 'खडी बोली' का एक नया नाम गढ़ लिया और उसकी प्राचीनता खोजते हुए उससे वर्तमान हिंदी का विकास तलाश करने में जुट गये। जबकि तथ्य यह है कि किसी रचनाकार ने अपनी भाषा को 19 वीं शताब्दी के पूर्वार्ध तक, खड़ी बोली में कभी नहीं कहा। भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने इस सच्चाई को एक प्रकार से स्वीकार भी किया है। वे 'खड़ी बोली' का अर्थ 'उर्दू' मानते थे। 'अग्रवालों की व्युत्पत्ति' शीर्षक पुस्तक में उन्होंने 1881 ईस्वी में लिखा भी था 'इनका मुख्य देश पश्चिमोत्तर प्रांत है और बोली स्त्री और पुरुष सबकी 'खड़ी बोली' अर्थात 'उर्दू' है'।

एक अंतहीन गुलामी से जकड़ चुके हिंदुस्तान ने अपने मौलिक स्वराज के लिए जूझना आरम्भ किया तो पसर चुकी सामाजिक कुरीतियों और धर्मिक–सांस्कृतिक संघर्षों के मध्य राष्ट्रीय चेतना को जागृत करने के लिए चिंतकों के स्वरूप में साहित्यकारों द्वारा महत्वपूर्ण भूमिका निभाई गयी। हिंदी साहित्य में शोषणवादी व्यवस्था, अंग्रेजी लूट, सामाजिक अंधविश्वासों पर गंभीरता से लिखा गया। हिंदुस्तान ने साहित्य के कुछ डग भरे ही थे, धर्म की चौहद्दी में एक युगीन और अंतहीन खाई पैदा कर दी गई। धर्म के अनुयाईयों ने समाज के बाशिंदों के साथ–साथ भाषा को भी बाँट दिया। भाषा के इस बंटवारे में एक ओर आम बोलचाल की भाषा 'हिन्दुस्तानी' से 'अरबी'–'फारसी' तर्जुमा की बोलचाल के सहज शब्दों को भी बाहर कर इसकी जगह पर संस्कृतनिष्ठ हिंदी को प्रमुखता दी गई, तो वहीं दूसरी तरफ 'हिन्दुस्तानी' भाषा में 'अरबी'– 'फारसी' तर्जुमा की बोलचाल के सहज शब्दों को संस्कृत से परहेज कर जारी रखा गया। फलस्वरूप सहस्त्राब्दी के उस छोर के शताब्दी से सदी के इस पड़ाव तक हिंदी दो भागों में बँट कर पली–बढ़ी और बड़ी हुई। एक 'उर्दूनिष्ठ हिंदी' और एक 'संस्कृतनिष्ठ हिंदी'।

ऐतिहासिक उल्लेख

समाज अलग– अलग भाषा, पृथक–पृथक संस्कृति, विभिन्न संस्कारों के साथ जीवन–यापन करता है। सातवीं शताब्दी की यह मान्यता थी कि ब्राह्मणेतर सभी चिंतन पद्धतियां ब्राह्मण विरोधी हैं, सिद्ध योगियों के वैचारिक सैलाब की लपेट में आ गयी थी। साधना पद्धतियों में वैषम्य के बावजूद सूफियों और सिद्धों के वैचारिक फलक की आधारभूमि, जीव, ब्रह्म और जगत के पारस्परिक रिश्तों से निर्मित थी। यही स्थिति जैन रचनाकारों की भी थी।

आठवीं शताब्दी में पालशासक धर्मपाल (770–810 ईसवी) के समकालीन बौद्ध धर्म की वज्रयान और सहजयान शाखा के प्रवर्तक तथा आदि सिद्ध हिंदी के प्रथम कवि सरह (सरहपा, सिद्ध सरहपा, जिनका मूल नाम 'राहुलभद्र', 'सरोजवज्र',

'शरोरुहवज्र', 'पद्म' तथा 'पद्मवज्र' नाम भी) था। सरहपा के शिष्य शबरपा (जन्म 780 ईसवी सन्) ने ग्रंथ 'चर्यापद' लिखा। शबरपा के शिष्य लुइप, चौरासी सिद्धों में सर्वोच्च, जिनके शिष्य उड़ीसा के तत्कालीन राजा और मंत्री हो गए थे। विरूपा के दीक्षित शिष्य मगध के डोम्भिया (जन्म 840 ईसवी सन्) ने इक्कीस ग्रंथों की रचना की गई, जिनमें 'डोम्बि–गीतिका', योगाचार्य और अक्षरद्विकोपदेश प्रमुख हैं। जालंध्रपा के दीक्षित शिष्य कर्नाटक के कण्हपा (जन्म 820 ईसवी सन्) और बिहार के सोमपुरी निवासी के लिखे चौहत्तर ग्रंथ बताए जाते हैं। यह पौराणिक रूढ़ियों और उनमें फैले भ्रमों के विरोधी थे।

नवीं शताब्दी के मध्य भाग में गुरु गोरखनाथ (गोरक्षनाथ) जी नाथ सम्प्रदाय के योगी थे। दसवीं शताब्दी में पुष्पदंत ने धर्मिक उद्देश्य से तीन रचनाएँ 'महापुराण', 'णयकुमार चरिउ' तथा 'जसहर चरिउ' की। सन् 933 ईसवी में जैन आचार्य देवसेन ने ग्रंथ 'श्रावकाचार' रचकर 250 दोहों में श्रावक–धर्म का प्रतिपादन किया गया है। दोहा छन्द में कवि ने गृहस्थ के कर्तव्यों पर भी विस्तार से विचार किया है। हेमचंद्र (1088–1172 ईसवी सन्) गुजरात के सोलंकी राजा सिद्धराज जयसिंह (993–1142 ईसवी सन्) और उनके भतीजे कुमारपाल (1142–1173 ईसवी सन्) के यहाँ उनका बड़ा मान था। ये अपने समय के सबसे प्रसिद्ध जैन आचार्य थे। हेमचंद्र ने कई लक्ष श्लोकों के ग्रंथ बनाए जिनमें प्रमुख हैं– 'अभिधन चिंतामणि आदि कई कोश 'काव्यानुशासन', 'छंदोनुशासन', 'देशीनाममाला', 'योगशास्त्रा', 'धतुपारायण', 'त्रिषष्टिशलाकापुरुषचरित' और 'परिशिष्ट पर्च' आदि। अपने व्याकरण के उदाहरणों के लिए हेमचंद्र ने एक 'द्वयाश्रय काव्य' 'कुमारपालचरित' नामक एक प्राकृत काव्य की भी रचना की है। इस काव्य में भी अपभ्रंश के पद्य रखे गए हैं। संस्कृत, प्राकृत एवं अपभ्रंश तीनों का समावेश कर इन्होंने व्याकरण ग्रंथ 'सिद्ध हेमचन्द्र शब्दानुशासन' जो सिद्धराज के समय में बनाया। हेमचंद्र कृत 'हेमचंद्र शब्दानुशासन' से अपभ्रंश के एक बहुचर्चित दोहे का पहला चरण, **''भल्ला हुआ जु मारिया भैंणी म्हारा कन्त''**। अब इसे नस्तालीक़ लिपि में लिखकर इसी लिपि में पढ़ने पर **''भल्ला शब्द भला, जु शब्द जो, भैंणी शब्द बहनी, म्हारा''** शब्द हमारा पढा जायेगा'। अर्थात इस चरण को इस प्रकार पढेंगे **''भला हुआ जो मारया बहनी हमारा कन्त''**।

यह अपभ्रंश की तुलना में एक विकसित भाषा है और हिन्दवी से कहीं अधिक देहलवी / तथाकथित खडी बोली के निकट है। बौद्धों के प्रति ब्राह्मणों का वह घृणा भाव जिसका उल्लेख मृच्छ कटिका के सातवें–आठवें अध्यायों में हुआ है, नवीं–दसवीं शताब्दी तक ठंडा पड़ चुका था। शंकर, कुमारिल और उदयन की बौद्ध धर्म विरोधी भूमिकाएं भी इस समय तक लगभग अर्थहीन होने लगी थीं। हुजवेरी के प्रसिद्ध ग्रंथ 'कशपफुलमहजूब' से पता चलता है कि दसवीं शताब्दी में अविभाजित हिन्दुस्तान का लाहौर ब्राह्मणों, बौद्धों, सिद्धयोगियों और अनेक सूफी चिंतकों का केंद्र बन चुका था। मुल्तान की सूफी खानकाहों में सिद्ध योगियों का आना–जाना भी था। पृथक–पृथक धार्मिक आस्थाओं के साथ सूफियों और सिद्धयोगियों के मध्य वैचारिक आदान–प्रदान, जैन और सूफी कवियों के प्रेम में संयोग वियोग के अनेक दोहे कथ्य और शिल्प की दृष्टि से परस्पर मेल खाते हैं। प्रारंभिक सूफी कवियों ने मसनवियाँ (कथा काव्य) नहीं लिखे। सूफियों के मल्फूजात और चिट्ठियों में जो कुछ दोहे उपलब्ध हैं, उनमें से कुछ तेरहवीं शताब्दी से पूर्व के लगते हैं। उनकी हिन्दवी या अपभ्रंश रचनाएं दोहों की शक्ल में ही उपलब्ध हैं। परन्तु तेरहवीं शताब्दी ईस्वी से पूर्व किसी भी मुस्लिम रचनाकार की कोई प्रामाणिक रचना भी उपलब्ध नहीं है।

सन् 1184 ईसवी में शालिभद्र सूरि ने 205 छंदों का खण्डकाव्य 'भरतेश्वर–बाहुबली रास' और 'बुद्धरास' की रचना की। मुनि जिनविजय ने इस ग्रंथ को जैन–साहित्य की रास–परंपरा का प्रथम ग्रंथ माना है। सन् 1184 ईसवी में जैन पंडित सोमप्रभसूरि ने 'कुमारपालप्रतिबोध' नामक एक गद्य–पद्यमय संस्कृत–प्राकृत काव्य लिखा, जिसमें समय–समय पर हेमचंद्र द्वारा कुमारपाल को अनेक प्रकार के उपदेश दिए जाने की कथाएँ लिखी हैं। यह ग्रंथ अधिकांश प्राकृत में ही है– बीच–बीच में संस्कृत श्लोक और अपभ्रंश के दोहे आए हैं। सन् 1200 ईसवी में आसगुकवि ने पैंतीस छंदों का एक लघु खण्ड काव्य 'चन्दनबाला रास' जालौर में रचा। सन् 1209 ईसवी में जिन धर्मसूरि ने 'स्थूलिभद्र रास' काव्य की रचना की। काव्य की भाषा पर अपभ्रंश का प्रभाव अधिक है, फिर भी इसकी भाषा का मूल रूप हिंदी है।

धर्मिक दृष्टि से प्रेरित होने पर इसकी भावभूमि और अभिव्यंजना काव्यानुकूल है। सन् 1213 ईसवी में सुमतिगणि ने 'नेमिनाथ रास' की अठावन छंदों में रचना की। रचना की भाषा अपभ्रंश से प्रभावित राजस्थानी हिंदी है। सन् 1231 ईसवी में विजयसेन सूरि की रचित काव्यकृति 'रेवंतगिरी रास' है। यात्रा तथा मूर्तिस्थापना की घटनाओं पर आधरित यह रास वास्तुकलात्मक सौंदर्य का भी आकर्षण प्रस्तुत करता है। प्रकृति के रमणीक चित्र इस काव्य तथा कलापक्षों का श्रृंगार करते हैं। 'आराधना' (1273 ईसवी सन् के लगभग) दो पृष्ठों में जैन–आराधना प्रक्रिया का प्रतिपादन है। 'अतिचार' (1283 ईसवी सन्), 'नवाकार व्याख्यान टीका' (1301 ईसवी सन्),'र्स्वतीर्थ नमस्कार स्तवन' (1302 ईसवी सन्) और 'अतिचार' (1312 ईसवी सन्) इन सभी पर अपभ्रंश का प्रभाव है। इनमें संस्कृत के तत्सम तथा समस्त शब्द भी प्रयुक्त हैं। सन् 1304 ईसवी में जैनाचार्य मेरुतुंग ने 'प्रबंध चिंतामणि' नामक एक संस्कृत ग्रंथ 'भोजप्रबंध' के ढंग का लिखा, जिसमें बहुत–से पुराने राजाओं के आख्यान संग्रहित किए। तरुणप्रभ सूरि कृत अनूदित व्याख्यात्मक ग्रंथ 'तत्वविचार प्रकरण' (चौदहवीं सदी), 'षडावश्यक बालावबोध' (1354 ईसवी सन्) है, जिसमें जैन धर्म संबंधी शिक्षात्मक कथाएं हैं। सधरु अग्रवाल का 'प्रद्युम्नचरित्रा' (1354 ईसवी सन्) ब्रजभाषा के आद्यवधि प्राप्त ग्रंथों में सबसे प्राचीन माना गया है। इसमें चौबीस तीर्थकरों की वन्दना के पश्चात् प्रद्युम्न की कथा का वर्णन किया गया है। शालिभद्रसूरि कृत 'पंचपाण्डवचरितरास' पौराणिक कथा पर आधरित जैन काव्य में पाण्डवों की कथा को अहिंसा पर आधारित रखा गया है। इसका प्रणयन ईसा की चौदहवीं शताब्दी के अंत में किया गया है। पन्द्रह सर्गों में विभाजित इस काव्य में युद्ध और अहिंसा में से अहिंसा का चयन ही कथा का मुख्य लक्ष्य है। इस काव्य की भाषा अपभ्रंश से प्रभावित राजस्थानी हिंदी है। उदयवन्त (विजयभद्र) कृत 'गौतमरास', घटना और भाव समन्वय से युक्त एक सरस खण्डकाव्य है। जैन तीर्थंकर महावीर के प्रथम गणध्र गौतम इस काव्य के चरितनायक हैं। जिसकी भाषा अपभ्रंश–प्रभावित राजस्थानी हिंदी है। जाखू मणियार कृत 'हरिचंदपुराण' (1396 ईसवी सन्) कथ्य, अभिव्यंजना तथा भाव–गाम्भीर्य की दृष्टि से यह काव्य भक्तिकाल में रचित ब्रजभाषा– काव्य का आरंभिक निदर्शन है। देवप्रभ द्वारा चौहदवीं शताब्दी के अंत में रचित 'कुमारपालरासो' जैन रास–काव्यों तथा वीर–प्रशस्तिपरक रासो काव्यों की प्रवृत्तियों का समन्वय करती है।

जैन कवि पदमनाथ कृत 'कान्हड़ दे प्रबंध' ईसा की पन्द्रहवीं शताब्दी के आरंभ में रचित काव्यकला के पूर्ण विकास एवं पद्य के साथ गद्य के प्रयोग से युक्त रचना है। इसकी रचना–पद्धति रासो–काव्यों की शैली से भिन्न है। इसमें महाराजा कान्हड़ देव का चरित वर्णित है। 'तपोगुच्छ गुर्वावली' (1425 ईसवी सन्) में तपोगच्छीय जैन आचार्यों की नामावली और उनका वर्णन है। इसका गद्य यत्र–तत्र अलंकृत और सानुप्रास है। जैन कवि पदमनाथ की 'डूंगर बावनी' (1486 ईसवी सन्) जिसका नामकरण कवि ने अपने आश्रयदाता डूंगर सेठ के नाम पर किया है। इसमें 53 छप्पय हैं जिनमें दया, दान, कर्म–फल, नम्रता आदि में ही जीवन– साफल्य माना गया है एवं सप्त व्यसन (जुआ, मांस–भक्षण, सुरापान, वेश्यागमन, आखेट, चोरी, परनारी–रमण) से बचने का परामर्श दिया गया है। जैन कवि ठाकुरसी की रचनाएँ 'कृपणचरित्र' और 'पंचेन्द्रीवेलि' हैं, जिनका रचनाकाल (1523–1526 ईसवी सन्) है। इनकी हस्तलिखित प्रतियाँ मुम्बई के दिगम्बर मन्दिर और जयपुर के वधीचन्द मन्दिर में सुरक्षित है। जैन श्रावक जटमल ने प्रेमविलास प्रेमलता की कथा (1556 ईसवी सन्) की रचना लाहौर में की थी। कवि ने इसका आरम्भ जैनाय नमः से करते हुए अपना परिचय एवं तत्कालीन शासक का नाम भी दिया है। इसकी कथावस्तु मौलिक है, जिसमें लोकोत्तर घटनाओं की प्रधानता है। बनारसी दास जैन का भक्तिकालीन नीतिकवियों में मुख्य स्थान है। ये जौनपुर के रहने वाले एक जैन जोहरी थे, जो आमेर में भी रहते थे। इनके पिता का नाम खड़गसेन था। ये 1586 ईसवी सन् में उत्पन्न हुए थे। सम्राट अकबर के प्रशंसक थे। जहांगीर के दरबार में भी गए थे। शाहजहाँ के दरबार में तो इन्हें विशेष मान प्राप्त था। 'नवरस पद्मावलि', 'नाटक समयसार' (कुंदकुंदाचार्य कृत ग्रंथ का सारद्), 'बनारसी विलास' (फुटकल कवित्तों का संग्रह), 'अर्द्ध कथानक', 'नाममाला' ;कोशद्ध, 'बनारसी पद्धति मोक्षपदी', 'ध्रुववंदना', 'कल्याण मंदिर भाषा', 'वेदनिर्णय पंचाशिका', 'मारगन विद्या' और 'भाषा सूक्तिमुक्तावली' आदि इनकी प्रमुख रचनाएँ हैं। राजसमुद्र का जन्म 1590 ईसवी सन् में बीकानेर में हुआ था। इनका बचपन का नाम खेतसी था। 1599 ईसवी सन् में जिनसिंह सूरि से दीक्षा लेने पर इनका नाम राजसमुद्र हो गया। इनकी 'शालिभद्र चौपाई', 'गजसुकमाल चौपाई', 'प्रश्नोत्तर रत्नमाला', 'कर्मबत्तीसी', 'शीलबत्तीसी' और 'बालावबोध'

प्रमुख रचनाएँ हैं। इनका मुख्य विषय नीति है। इनकी भाषा राजस्थानी है। कुशलबीर के नीति ग्रंथ–'भोज चौपाई', 'सीलवती रास', 'कर्म चौपाई', 'वर्णन संपुट' तथा 'उद्दिम–कर्म–संवाद' हैं। सोजत नगर के निवासी थे। ये कल्याणलाभ के शिष्य थे और इनका रचना–काल (1637 से 1672 ईसवी सन्) है। इनकी भाषा राजस्थानी है और शैली उपदेशात्मक है। आनन्दध्न की निर्गुण भक्ति के भजनों की रचनाएँ मिलती हैं। इनकी 'आनन्दध्न चौबीसी' और 'आनन्दध्न बहोत्तरी' नामक कृतियाँ प्रसिद्ध हैं। जिनदत्तसूरि की 'उपदेश रसायन रास', प्रज्ञा तिलक की 'कच्छुलि रास', सार मूर्ति की 'जिन पद्म सूरि रास', कनकामर मुनि की 'करकंड चरित रास', पल्हण की 'आबूरास', देवेन्द्र सूरि की 'गय सुकमाल रास', अम्बदेव सूरि की 'समरा रास', अभय तिलकमणि की 'अमरा रास' हरिभद्रसूरि की 'नेमिनाथ चरिउ', राजशेखर सूरि की 'नेमिनाथ पफागु', नयनंदी की 'सुंदसण चरिउ' और पदम कीर्ति की 'पास चरिउ' आदि भी उल्लेखनीय हैं। रमल जैन कृत 'मोक्षमार्गप्रकाश' एवं द्वीपचन्द्र जैन कृत 'चिद्विलास' जैन धर्म की दार्शनिक रचनाएं हैं। दोनों खड़ी बोली के विशिष्ट गद्यकार हैं। दौलतराम जैन बसवा निवासी कृत 'भाषा–पद्मपुराण' अथवा 'पद्मपुराण वचनिका' राजस्थानी–ब्रजभाषा प्रभावित खड़ी बोली में प्राकृत की जैन राम–कथा का व्याख्यामय अनुवाद है। इनकी दूसरी प्रख्यात वचनिका 'आदि पुराण वचनिका' है जो भगवान ऋषभदेव तथा राजा श्रेयांस के जन्मों की कथा से सम्बद्ध जैन प्राकृत–ग्रंथ 'आदिपुराण' का व्याख्यामय अनुवाद है। इनकी अन्य गद्य रचनाएं हैं–'पुण्याश्रव कथा कोश वचनिका', 'वसुनन्दिश्रावकाचार वचनिका', 'परमात्म प्रकाश वचनिका', 'श्रीपाल चरित्र वचनिका' तथा 'हरिवंश पुराण वचनिका'। दौलतराम जैन इंदौर निवासी कृत 'मल्लिनाथ चरित्र वचनिका', टेकचंद जैन कृत 'सुदृष्टि–तरंगिणी वचनिका' और अभयचंद कृत 'हितोपदेश वचनिका' गद्य की विशेष उल्लेखनीय रचनाएं हैं। ये खड़ीबोली के विशिष्ट गद्यकार हैं। जिनसमुद्र सूरि रचित 'भर्तृहरि वैराग्य–शतक टीका' ब्रजभाषा–मिश्रित खड़ीबोली में उल्लेखनीय टिप्पण–टीका है।

मलिक मुहम्मद जायसी (1477–1542 ईसवी सन्) हिन्दवी (हिन्दवी में ब्रज या अवधी जैसी कोई विभाजक रेखा नहीं थी) के कवि, हिन्दी साहित्य के भक्ति काल की निर्गुण प्रेमाश्रयी धारा के सरल और उदार सूफी महात्मा कवि थे। शेख बुरहान और सैयद अशरफ के शिष्य जायसी मिस्र में प्रधानमंत्री मलिक वंश के थे। मलिक मोहम्मद जायसी (1467–1542 ईसवी सन्) उत्तर प्रदेश के रायबरेली जिले के जायस के रहने वाले थे। हिंदी साहित्य के भक्ति काल की निर्गुण प्रेमाश्री धारा के कवि थे। 'अखरावट', 'आखिरी कलाम', 'इतरावत', 'कहारनामा', 'चंपावत', 'चित्रावत', 'जपजी', 'धनावत', 'पद्मावत', 'पोस्तीनामा', 'मटकावत', 'मसला या मसलानामा', 'मुकहरानामा', 'मुखरानामा', 'मेखरावटनामा', 'मैनावत', 'मोराईनामा', 'लहतावत', 'सकरानामा', 'सखरावत', 'सुर्वानामा', 'सोरठ', 'स्फुट कवितायें', 'होलीनामा' समेत 21 प्रमुख रचनाएं हैं। आचार्य रामचंद्र शुक्ल के मध्यकालीन कवियों की गिनती में जायसी को प्रमुख कवि का स्थान दिया गया है। पद्मावत दोहा और चौपाई, छंद में लिखा गया महाकाव्य है। मलिक मुहम्मद जायसी ने ''अरबी तुर्की हिन्दवी, भाषा जेती आहि। जामें मारग प्रेम का, सभै सराहैं ताहि'' लिखकर हिन्दवी में व्याप्त प्रेम तत्व का संकेत किया।

सैयद इब्राहीम 'रसखान' (1548 –1628 ईसवी सन्) हिन्दी के कृष्ण भक्त, विठ्ठलनाथ के शिष्य एवं वल्लभ संप्रदाय के सदस्य तथा रीतिकालीन रीतिमुक्त अकबर के समकालीन मुस्लिम कवि थे। रसखान ने भागवत का अनुवाद फारसी और हिंदी में किया है। रसखान के सगुण कृष्ण की सारी लीलाएं बाललीला, रासलीला, फागलीला, कुंजलीला, प्रेम वाटिका, सुजान प्रासंगिक है। रसखान ने नबीश्री हजरत मुहम्मद तथा हजरत अली की प्रशंसा में भी पद लिखा हैं। अबुल फैज फैजी (जन्म 1574 ईसवी सन्) की हिन्दी रचनाएं इसका ज्वलंत प्रमाण हैं।

मुल्ला अब्दुल कादिर बदायूनी ने 'चन्दायन' की भाषा को हिन्दवी कहा। सैयद निजामुद्दीन मधनायक (जन्म 1591 ईसवी) कृत मधनायक श्रृंगार', मीर अब्दुलवाहिद (मृत्यु 1608 ईसवी) कृत 'हकाइके–हिन्दी', आदि महत्वपूर्ण विमर्श है।

मीर अब्दुल जलील (1662–1726 ईसवी सन्) ने ऐसी चतुष्पदियां लिखकर जिनमें एक चरण अरबी का, एक फारसी का, एक हिन्दवी का और एक तुर्की का होता था, हिन्दवी के सार्वभौमिक महत्व को दर्शाया था। निजामुल्मुल्क आसफ जाह वजीर फर्रूखसियर बादशाह की प्रशंसा में मीर जलील ने लिखा था **'असीस दे के कही हिन्दवी मों यों संबत। रहे जगत में अचल बास ये वजीर सदा'।**

हिन्दवी नस्तालीक लिपि में लिखी जाने वाली भारतीय भाषा, को हिन्दी कहने का भी प्रचलन था जो आगे चलकर देहलवी/उर्दू के लिए भी जारी रहा। शेख अब्दुल्लाह अंसारी (रचनाकाल 1663 ईसवी सन्) ने इस्लामी शरीअत पर 'फिकए–हिन्दी' शीर्षक पुस्तक लिखी जिसकी भाषा को हिन्दी बताया – **''केते मसले दीन के, अबदी कहैं अमीन। फिका हिन्दी जबान पर, बूझो करो यकीन''**।

मुल्ला मसीह ने जहांगीर के समय में पांच हजार छंदों में मसीही रामायन नामक एक मौलिक रामायण की रचना की। इस रामायण को सन् 1888 ईसवी में लखनऊ के मुंशी नवल किशोर प्रेस से प्रकाशित किया गया। बुल्बुल बीजापुर के कवि ने **''हरीरे–हिन्दवी पर कर तूं तस्वीर। लिबासे–पारसी है पाये–जंजीर''** लिखकर फारसी की तुलना में हिन्दवी का वर्चस्व घोषित किया।

जिन रचनाकारों पर संस्कृत के संस्कारों का प्रभाव था और जो अपनी रचनाएं नागरी या कैथी लिपि में लिखने के अभ्यस्त थे, वे अपनी भाषा को 'भाखा' कहते थे। अब्दुल गनी महाराष्ट्र के कवि ने इब्राहीम आदिलशाह की प्रशंसा में 'इब्राहीमनामा' लिखा, जिसमें इस तथ्य का स्पष्ट उल्लेख किया कि मैं अरब और अजम ईरान, की कृत्रिम भाषाएं नहीं जानता। मैं केवल हिन्दवी और देहलवी जानता हूं– **'जबां हिन्दवी मुझसों हौर देहलवी। न जानूं अरब हौर अजम मसनवी।'** स्पष्ट है कि हिन्दवी के साथ **'और देहलवी'** लिखना इस तथ्य को स्पष्ट संकेतित करता है कि देहलवी एक स्वतंत्र भाषा थी। यही भाषा, हिन्दवी/हिन्दी, जो नस्तालीक लिपि में लिखी जाती थी, के सहयोग से आगे चलकर उर्दू कहलायी।

झज्झर निवासी शेख महबूब आलम (17वीं शताब्दी) ने 'मसाइले–हिन्दी' में लिखा– **''कयामत के अहवाल में हिन्दी कही किताब''**। अथवा **''तलब बहुत उस यार की देखी साँची सूझ। लिखी किताब इस वास्ते हिन्दी बोली बूझ''**।

मिर्जा गालिब अपनी उर्दू गजलों के लिए भी हिन्दी शब्द का प्रयोग करते थे। 30 जनवरी 1855 ईसवी सन् को सैयद बदरुद्दीन के नाम अपनी चिट्ठी में लिखते हैं –'आप हिन्दी और फारसी की गजलें मांगते हैं, फारसी गजल तो शायद एक भी नहीं कही। हां हिन्दी गजलें किले के मुशायरों में दो–चार कही थीं। स्पष्ट है कि गालिब के समय तक आते–आते हिन्दी, हिन्दवी, देहलवी और उर्दू एक दूसरे के पर्याय बन चुके थे। हिन्दवी, हिन्दी अथवा देहलवी कही जाने वाली भाषा का जो नस्तालीक लिपि में लिखी जाती थी, उसका पालन–पोषण मुस्लिम साहित्यकारों ने ही किया। हिन्दवी को 'भाखा' कहने और इसे देवनागरी में लिखने वाले लेखकों की स्थिति कुछ भिन्न नहीं थी।

यहां एक बात और भी स्पष्ट होती है कि प्रारंभ से उत्तर मध्यकाल तक हिन्दवी, हिन्दी या देहलवी के मुस्लिम साहित्यकारों ने अपनी रचनाएं नस्तालीक लिपि में ही लिखीं। इस लिपि में एराब, स्वर–चिह्न, नहीं लगाये जाते। फलस्वरूप अध्ययन की जिज्ञासा से जब इन साहित्यकारों ने प्राचीन अपभ्रंश को नस्तालीक में लिप्यान्तरित किया तो तशदीद द्वित्त्व–चिह्न और एराब न होने के कारण अनेक शब्दों के रूप परिवर्तित हो गये और ध्वनियां भी अपेक्षाकृत कोमल हो गयी। उदाहरण स्वरुप कुतुबन कृत 'मृगावती' (1503 ईसवी)।

गुरु गोविन्द सिंह (22 दिसम्बर 1666–7 अक्टूबर 1708 ईसवी सन्) ने कृष्णावतार की रचना के लिए भाखा को अभिव्यक्ति का जरिया बनाया, 'दसम कथा भागवत की, भाखा करी बनाय'। किन्तु न तो हिन्दवी के पक्षधरों ने और न ही भाखा प्रेमियों ने अपनी भाषा को किसी क्षेत्र–विशेष से जोड़ा, न ही उसमें धर्म–विशेष की गंध देखने का प्रयास किया।

अठारहवीं शताब्दी के अंत तक इलाकाई बोलियों से इतर भारत में संस्कृत, पाली, प्राकृत, अपभ्रंश, हिन्दवी, हिन्दी, देहलवी, भाखा, रेख्ता, उर्दू आदि ऐसी ही भाषाएं थी। आज जिन भाषाओं को हम ब्रज या अवधी के नामों से जानते हैं, उनके रचनाकारों ने 18वीं शताब्दी के लगभग अन्त तक उनका ब्रज या अवधी होना कभी स्वीकार नहीं किया। दकनी पहली भाषा कही जा सकती है जिसने अपनी पहचान इलाके के आधार पर बनाने का प्रयास किया। संभवतः इसीलिए

उसका साहित्य दक्षिण की चौहद्दियां नहीं लांघ पाया। जो रचनाकार फारसी साहित्य और भाषा के संस्कारों से जुडे थे और अपनी रचनाएं नस्तालीक; वर्तमान उर्दू लिपि में लिखते थे, वे अपनी भाषा को हिन्दवी /हिंदी, और देहलवी कहते थे। अवध की गंगा–जमुनी सभ्यता का प्रभाव हिंदी और इससे जुड़ी क्षेत्रीय भाषाओं अवधी, ब्रज और भोजपुरी पर भी पड़ा। मुगलकाल से लेकर अंग्रेजी शासन और फिर आजाद भारत में अब तक गैर मुस्लिम और मुस्लिम लेखकों और कवियों ने हिंदी में भी अपना उत्कृष्ट योगदान दिया।

मुगल काल में हिन्दवी के प्रति सम्राटों का विशेष लगाव होने के कारण फारसी के अनेक प्रतिष्ठित कवियों ने भी हिन्दवी, हिन्दी को समृद्ध करने का प्रयास किया। मुहम्मद आरिफ जान (1710–1773 ईसवी सन्) कृत 'रसमूरत', 'अंग शोभा', 'मदन मूरत' और 'मंगल चरन' ग्रंथ हैं। कासिमशाह (1736 ईसवी सन्) कृत 'हंसजवाहर', नूर मुहम्मद (1764 ईसवी सन्) कृत 'अनुराग बाँसुरी' तथा 'इन्द्रावती' आदि उल्लेखनीय है। इंशा अल्ला खां 'इंशा' (1756–1817 ईसवी सन्) का जन्म तो पं. बंगाल के मुर्शिदाबाद में हुआ था लेकिन उनके पूर्वज दिल्ली आकर बस गए और फिर इंशा अल्ला लखनऊ आ गए। इंशा अल्ला खां 'इंशा' की लिखी 'रानी केतकी की कहानी' (उदयभान चरित) को हिंदी की पहली गद्य रचना माना जाता है। इसकी रचना 1803 ईसवी सन् में की गई जबकि 1841 ईसवी सन् में यह मुद्रित हुई। शाह नजफ अली (1809–1845 ईसवी सन्) कृत 'चिंगारी', अवध के बादशाह वाजिद अली शाह (जन्म 30 जुलाई 1822– निधन 1 सितंबर 1887 ईसवी सन्) के समय में हिंदी–अवधी–ब्रज में अनेकों ठुमरियां, ख्याल, टप्पे और दादरे लिखे गए। वाजिद अली शाह खुद भी संगीत और साहित्य के प्रेमी थे, इसलिए उनके दरबार में हिंदी–अवधी–ब्रज भाषा के रचनाकारों को बहुत अहमियत दी जाती थी। खुद वाजिद अली शाह की प्रसिद्ध 'ठुमरी बाबुल मोरा नैहर छूटो जाए', आज भी बेहद लोकप्रिय है। अवध में वाजिद अली शाह के शासनकाल में भी हिंदी, अवधी और ब्रज भाषाओं का खूब विकास हुआ। सैयद अहमद देहलवी कृत फरहंगे–आसफिया के प्रथम खंड से इसी युग के एक मुस्लिम रचनाकार का लगभग इसी आशय का एक दोहा है– **''बाँह छुडाए जात है, निबल जानि के मोहि। हिर्दय में से जाय तो, मरद बदूंगी तोहि''।**

सन् 1857 ईसवी सन् भारतीय समाज जिस त्रासदी से जूझ रहा था उसका चित्रण उस काल के कवियों और लेखकों की कृतियों में देखने को मिलता है। उस समय एक अंतहीन गुलामी से उपजी समस्याओं अस्मिता का प्रश्न, गुलामी का दर्द, गरीबी और भूख की चुभन, स्त्रियों एवं पिछड़े वर्ग की दयनीय स्थिति आदि हमारे साहित्य के मूल विमर्श रहे। तब के साहित्य में सांप्रदायिकता एवं आतंकवाद के विमर्श नहीं थे जो बीसवीं शताब्दी के अंत और इक्कीसवीं शताब्दी का सबसे महत्वपूर्ण विषय बनकर सामने आए हैं।

उन्नीसवीं शताब्दी में हिंदी हिन्दुओं की भाषा और उर्दू मुसलमानों की भाषा के रूप में स्वीकार की जाने लगी। उन्नीसवीं शताब्दी के अंतिम दशकों में पंडित प्रताप नारायण मिश्र के ''जपौ निरंतर एक जबान। हिंदी हिन्दु हिन्दुस्तान'' जैसे महामंत्र ने विद्वानों की सोच का धरातल ही बदल दिया।

सन 1947 ईसवी सन् के भारत विभाजन के बाद की रचनाओं में सांप्रदायिकता एवं दहशत के विमर्श केंद्र में आ गए। अल्पसंख्यक हो या बहुसंख्यक सभी इसी धूल–माटी की पैदाइश हैं। सभी के पूर्वज यहीं जन्मे और यहीं जीवन पूर्ण किए। सभी की भाषा, संस्कृति संवेदनाएं, समस्याएं, गरीबी और बेरोजगारी भी एक जैसी ही है। अलग–अलग पंथ पृथक–पृथक रास्तों से उसी एक ईश्वर तक ले जाते हैं।

बीसवीं सदी में हिंदी के ईसाई धर्मावलम्बी विद्वान बेल्जियम से भारत आये एक मिशनरी फादर कामिल बुल्के (1 सितंबर 1909–17 अगस्त 1982 ईसवी सन्) थे। भारत आकर जीवनपर्यंत हिंदी, तुलसी और वाल्मीकि के अनुयायी रहे। सन् 1972 से 1977 ईसवी सन् तक भारत सरकार की केंद्रीय हिन्दी समिति के सदस्य बने रहे। इन्हें साहित्य एवं शिक्षा के क्षेत्र में भारत सरकार द्वारा सन 1974 ईसवी सन् में पद्म भूषण से सम्मानित किया गया। रामकथा : उत्पत्ति

और विकास, 1949 ईसवी सन्, हिंदी–अंग्रेजी लघुकोश, 1955 ईसवी सन्, अंग्रेजी–हिंदी शब्दकोश, 1968 ईसवी सन्, मुक्तिदाता, 1972 ईसवी सन्, नया विधान, 1977 ईसवी सन्, नीलपक्षी, 1978 ईसवी सन् उनकी महत्वपूर्ण कृति है। अगस्ट सरडेल, अलेक्जेंडर फॉकनर, ई. एच. पॉमर, ई. बी. ईस्टवीक, ए. एच. हार्ली, ए. एफ. रुडोल्पफ हार्नलि, एच.एच. विल्सन, एच. एस.केलॉग, एच.सी.शोलबर्ग, एडविन ग्रीव्ज, एफ.ए.की, एफ.एस. ग्रॉउज, एम.केप्शन, एम.टी.आदम, एस. डब्ल्यू. फैलन, कर्क पैट्रिक, कर्नल डब्ल्यू. आर.एम.होलरॉयड, कैप्टन रोबक, कैप्टन विलियम प्राइस, कैमिलो तेगलीऑब्ने, कोशकार, गिल क्राइस्ट, जूल ब्लॉक, जे.जेटलो प्रोखनो, जे.टी.प्लॉट्स, जे.डी.बेट, जेम्स आर बैलेंटाइन, जॉन ए ग्रियर्सन, जॉन क्रिश्चियन, जॉन चेम्बरलेन, जॉन टी प्लॉट्स, जॉन डाउसन एमआर ए एस, जॉन पार्सन, जॉन पफर्गुसन, जॉन बार्थविक गिलक्राइस्ट, जॉन बीम्स, जॉन शेक्सपीयर, जॉर्ज अब्राहम ग्रियर्सन, जॉर्ज एस ए रेमकिंग, जॉर्ज हाडले, जोसेफ हेलिओडोर गार्सा द तासी, जोहन जोशुआ केटलेर, डंकन पफोर्ब्स, डॉ जम दिम शीट्स, डॉ रोनॉल्ड स्टुअर्ट मैकग्रेगर, डॉ अलेक्सेई पेत्रोविच बरात्रिकोव, डॉ एलपी टेसिटरी, डॉ जे एन कारपेंटर, डॉ जे एम मैकपफी, डॉ डगलस पी हिल, डॉ मोनियर विलियम्स, थॉमस रोबक, द रोजेरिओ, पादरी एडविन ग्रीपफस, पादरी टी एवंस, पीटर ब्रेटन, पेजजोनी विकारियो, पॉल व्हले, फर्ग्युसन, फड्रिक फॉन श्लीगल, फांसिसस एम तुरोनेंसिस, फेडरिक पिंकाट, बेंजामिन शुल्ट्ज, मेजर एफ आर एच चौपमेंन, रूसो, रेवरेंड अहमद शाह, रेवरेंड एजी एटकिंस, रेवरेंड टी ग्राहम बेली, रोबक, विलियम एंड्रीय, विलियम एथॉरिंगटन, विलियम प्राइस, विलियम बटलर येट्स, विलियम हंटर, सर मोनियर विलियम्स, सेवास्तिवा रोदल्फ डालगादो, सैंडफोर्ड ओरनोट, हेनरी थॉमस कोलब्रुक, हेनरी माय इलियट, हेरा सिम लेबडेपफ, हैरिस हेनरी आदि विद्वानों ने हिंदी के लिए अपने योगदान दिए हैं। इक्कीसवीं सदी में हिंदी के ईसाई धर्मावलम्बी विद्वान डॉ. अलेक्जेंडर सेंकेविच, डॉ. आई बंघा, डॉ. ई तुर्बियानी, डॉ. उलरिक स्टोर्के, डॉ. एंड्रीज शूटलर, डॉ. एडमोर जे बेबिनियु, डॉ. एण्डरीस बॉक रैमिग, डॉ. एम.आर.एल्विन, डॉ. एलिजाबेथ असा होल, डॉ. एलिस डेविसन, डॉ. एवगेनी पेत्रोविच चेलीशेव, डॉ. ओडोलेन समैक्ल, डॉ. केनेथ ई.ब्रायंट, डॉ. केरीन शोमर, डॉ. कैथरीन जी. हेनसन, डॉ. कैथलीन अर्नडल, डॉ. कोबर्न, डॉ. कोल्वो कोवाचेव, डॉ. क्लॉउस पीटर जॉलर, डॉ. गैब्रिएला निक एलीवा, डॉ. ग्रुने बॉम जेसन ओ, डॉ. जूडिथ बेनाडे, डॉ. जे पैट्रिक ओलोवेल्ले, डॉ. जेम्स डब्ल्यू गैर, डॉ. जेम्स लोष्टपफेल्ड, डॉ. जेरोस्लाव स्ट्रैंड, डॉ. जॉन जे गुम्प्रज, डॉ. जॉन पीटरसन, डॉ. जॉन ब्रैडन लोवे, डॉ. जॉन स्टेटन हॉली, डॉ. टिमोथी लुबिन, डॉ. टीम वण्डर अवयर्ड, डॉ. डगलस आर्नोल्ड जॉस, डॉ. डब्ल्यू एम क्लेवर्त, डॉ. डेजी रॉकवेल, डॉ. डेनियल गोल्ड, डॉ. डेविड एन लोरेन्जें, डॉ. डेविड एस मैंगीयर, डॉ. डेविड सी स्वैन, डॉ. तातियाना रुतकिवस्का, डॉ. तैयो दमिस्टेखत, डॉ. थियोडोर रिकोर्डी जूनियर, डॉ. थॉमस बी, डॉ. दानुता स्आसिक, डॉ. निकोल बलबीर, डॉ. निकोलॉय जरबेया, डॉ. पीटर जी पफीड लैंडर, डॉ. पॉल अरनी, डॉ. प्रोफेसर हेन्स हेनरिक हॉक, डॉ. फिन थीसन, डॉ. फिलिप लुत्जेन डर्फ, डॉ. फ्रांसिस प्रिटचेत, डॉ. पफांसेस्का ओरसिनी, डॉ. फेंकलिन सी सौथवर्थ, डॉ. बेथली साइमन, डॉ. बैरतील टिक्कनें,डॉ. बोरिस एम वोल्खोंसकी, डॉ. ब्लादिमीर मिलनर, डॉ. मारजेना मैगनुसजेवस्का, डॉ. मारिओला ओफ्रेडी, डॉ. मारिया क्षेशतापेफ ब्रिसकी, डॉ. मारिया नेज्यिशी, डॉ. मार्गोत गात्सलापफ हेलजिंग, डॉ. मैगी रोंकीन, डॉ. मोनिका बाहम टैटलबाख, डॉ. रिचर्ड बार्ज, डॉ. रिचर्ड सरन, डॉ. रूपरेख्त कार्ल्स यूनिवर्सिटॉट हाइडेलबर्ग, डॉ. रूपर्ट स्नेल, डॉ. रेबेका जे मैनरिंग, डॉ. रोनाल्ड स्टुअर्ट मैकग्रेगर, डॉ. रोबर्ट ह्युक स्टड्स, डॉ. लिंडा हेस, डॉ. लिनी हेनसन, डॉ. लूसी रोजेन्स्टीन, डॉ. लोथार लुत्से, डॉ. विलियम चार्ल्स मैकड्युगल, डॉ. वी एन फिलिप, डॉ. वेंडी सिंगर, डॉ. शलोट वोदवील, डॉ. शॉकर जी एच, डॉ. सिस्टर क्लेमेंट मेरी, डॉ. सुसन एस वैदली, डॉ. स्टीवेन सपुफले, डॉ. स्टेफनो पियानो, डॉ. हिडी पॉवेल, डॉ. हेर्मोन एच वॉन ओलफन, डॉ. हेलमुत नस्पिटल आदि विद्वानों ने हिंदी के लिए अपने योगदान दिए हैं।

भारतीय स्वाधीनता संग्राम में हिंदी की भूमिका

लेख

हरीश चन्द्र उपाध्याय
वरि. प्रबंधक (जी एंड जी), ऋषिकेश

निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल, बिन निज भाषा ज्ञान के, मिटत न हिय के सूल।
–भारतेंदु हरिश्चन्द्र

हिंदी हमारी आन है, हिंदी हमारी शान है, हिंदी हमारी वेदना, हिंदी हमारा गान है।
जिसको ना निज गौरव तथा निज देश का अभिमान है, वह नर नहीं नर पशु नीरा और मृतक समान है।
– मैथिलीशरण गुप्त

किसी आंदोलन में लोगों को जोड़ने में भाषा की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। भारत के स्वाधीनता के आंदोलन में जिस भाषा ने बहुत बड़ी भूमिका निभाई, उसका नाम है हिन्दी। हिन्दी दीर्घकाल से सारे देश में जन–जन के पारस्परिक संपर्क की भाषा रही है। यह केवल उत्तर भारत की भाषा नहीं बल्कि दक्षिण भारत के आचार्यों, बल्लभ आचार्य, रामानुज आदि ने इसी भाषा के माध्यम से अपने विचारों का प्रचार किया था। अहिंदी भाषी राज्यों के भक्त, संत, कवि (जैसे असम के शंकर देव, महाराष्ट्र के ज्ञानेश्वर व नामदेव और गुजरात के नरसी मेहता व बंगाल के चेतन्य आदि) ने इसी भाषा को अपने साहित्य और धर्म का माध्यम बनाया था।

श्रीमद्भागवत महापुराण में वर्णित एक कथा के अनुसार भारत, नाम मनु के वंशज तथा ऋषभदेव के सबसे बड़े बेटे भरत (एक प्राचीन सम्राट) के नाम पर पड़ा। एक व्युत्पत्ति के अनुसार भारत (भा + रत) शब्द का मतलब है–आंतरिक प्रकाश में लीन। इंडिया नाम की उत्पत्ति सिन्धु नदी के अंग्रेजी नाम ''इंडस'' (INDUS) से हुई है। पहले भारत को सोने की चिड़िया कहा जाता था। भारत अन्य नामों भारतवर्ष, आर्यावर्त, इंडिया, हिन्द, हिंदुस्तान, जम्बूद्वीप आदि से भी जाना जाता है। पहले भारत की सीमाएं बहुत बड़े भू–भाग में फैली थी।

भारत की आज़ादी के लिए 1857 से 1947 के बीच जितने भी प्रयत्न हुए, उनमें स्वतंत्रता का सपना संजोये क्रान्तिकारियों और शहीदों की उपस्थित सबसे अधिक प्रेरणादायी सिद्ध हुई। वस्तुतः क्रांतिकारी आंदोलन भारतीय इतिहास का स्वर्ण युग है। भारत की धरती में जितनी भक्ति और मातृ–भावना उस युग में थी, उतनी कभी नहीं रही। भारत की स्वतंत्रता के लिये अंग्रेजों के विरुद्ध आन्दोलन दो प्रकार का था, एक अहिंसक आन्दोलन एवं दूसरा क्रान्तिकारी आन्दोलन। एक अंग्रेजी किताब के रिकार्ड के अनुसार आजादी के दौरान 7 लाख 32 हजार क्रांतिकारी वीरगति को प्राप्त हुए। 123 लोगों को प्रमाणिक फांसी दी गई। भगतसिंह एवं अनेक वीरों ने क्रांति के लिए अपना बलिदान दिया था। जिन्हें जनता का भरपूर प्रेम मिला और सहानुभूति प्राप्त हुई। इस संग्राम में लाखों लोगों ने अपना बलिदान दिया। आजादी क्रांतिकारियों के बलिदान का ही फल है। भारत की स्वतंत्रता के बाद आधुनिक नेताओं ने भारत के सशस्त्र क्रान्तिकारी आन्दोलन को प्रायः दबाते हुए उसे इतिहास में कम महत्व दिया और कई स्थानों पर उसे विकृत भी किया गया। स्वराज्य उपरान्त यह सिद्ध करने की चेष्टा की गई कि हमें स्वतंत्रता केवल अहिंसात्मक आंदोलन के माध्यम से मिली है। इस नये विकृत इतिहास में स्वाधीनता के लिए प्राणोत्सर्ग करने वाले, सर्वस्व समर्पित करने वाले असंख्य क्रांतिकारियों और अमर हुतात्माओं की पूर्ण रूप से उपेक्षा की गई। मलाया व सिंगापुर में सुभाषचन्द्र बोस के नेतृत्व में आज़ाद हिन्द फौज का गठन किया गया। उन्होंने भारतभूमि पर अपना झण्डा गाड़ा। आज़ाद हिन्द फौज का भारत में भव्य स्वागत हुआ, उसने भारत की ब्रिटिश फौज की आँखें खोल दी।

हिन्दी की भूमिका– स्वतंत्रता संग्राम में हिन्दी का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। क्योंकि भारत में हिन्दी ही एक ऐसी भाषा थी जो सभी को एकता के सुत्र में पिरो सकती थी। 11वीं, 12वीं, 13वीं तथा 14वीं सदी के साहित्यकारों (दक्षिण भारत के रामानुज व बल्लभाचार्य, असम के शंकरदेव, महाराष्ट्र के ज्ञानेश्वर व नामदेव, गुजरात के नरसी मेहता तथा बंगाल के चेतन्य आदि) ने अपने विचारों का प्रचार पूरे भारत में हिन्दी में ही किया था और लोगों में नव चेतना का

प्रसार किया था। इस आंदोलन में जो भी विचारों का संचार था वह हिन्दी भाषा के माध्यम से हुआ। मुझे यह कहते हुए बहुत हर्ष हो रहा है कि पूरे विश्व में सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषा में हिन्दी तीसरे नंबर पर है। स्वाधीनता संग्राम में सारे कवि, लेखक, उपन्यासकार, साहित्यकारों व पत्रकारों ने हिन्दी भाषा को अपनाया तथा जन–जन तक पहुंचाया। संपर्क/सूचना/संचार के लिए हिन्दी भाषा का प्रयोग किया गया। भारतेन्दु जी व उनकी मंडली ने अपनी कलम की ताकत से लोगों में चेतना जगायी।

साहित्यकारों का योगदान – भारतेन्दु हरीशचंद्र ने हिंदी के जिस आधुनिक युग का प्रारंभ किया, उसकी जड़ें स्वाधीनता आंदोलन में ही थी। भारतेन्दु युग के साहित्यकारों ने स्वतंत्रता संग्राम की भूरी–भूरी प्रसंशा करते हुए भारत के स्वर्णिम अतीत में लोगों की आस्था जगाने का प्रयास किया। दूसरी ओर उन्होंने अंग्रेजों की शोषण की नीति का भी खुलकर विरोध किया। 1880 में भारत दुर्दशा नामक नाटक की रचना की। भारतेन्दु जी ने भारत की दुर्दशा को दिखाने के लिए यह नाटक लिखा जिसमें उन्होंने अपनी वेदना प्रगट करते हुए लिखा है कि जिस भारत का व्यास, कालिदास, पाणिनी ,सक्या मुनि, बानभट्ट, आर्यभट्ट, ब्रहमगुप्त आदि के नाम से सारे संसार में सर ऊँचा था, उस भारत की ये दुर्दशा। जिस भारत के राजा चन्द्रगुप्त और अशोक का शासन रोम व रूस तक माना जाता था उस भारत की ये दुर्दशा। जिस भारत में राम, युधिष्ठिर, नल, हरीशचंद्र, रतिदेव व शिवि आदि पवित्र चरित्र के लोग रहते थे, उस भारत की ये दुर्दशा। 1881 में अंधेर नगरी, 1930–रंगभूमि, 1931–चंद्रगुप्त विनायक वीर सावरकर द्वारा रचित पुस्तक "1857 का स्वतंत्रता समर" 1909 में गुप्त रूप से प्रकाशित हुई। सुभद्रा कुमारी चौहान ने झांसी की रानी कविता लिखकर लोगों में जोश भरा– ''बुंदेले हर बोलों के मुंह हमने सुनी कहानी थी, खूब लड़ी मर्दानी वह तो झांसीवाली रानी थी''। श्याम नारायण पांडे ने महाराणा प्रताप के घोड़े चेतक के लिए लिखा था–''रण बीच चौकड़ी भर–भर कर, चेतक बन गया निराला था, राणा प्रताप के घोड़े से पड़ गया हवा का पाला था''। इसके साथ ही बंकिम चंद्र चटर्जी का देशप्रेम से ओत–प्रोत गीत ''बंदेमातरम, सुजलाम सुफलाम मलयज शितलां, शस्य श्यामलाम मातरम, बंदे मातरम'' ने लोगों की रगो में उबाल ला दिया। अब किसी भी कीमत पर देश के लोगों को पराधीनता स्वीकार नहीं थी। जयशंकर प्रसाद जी ने इस प्रकार जोश भरा। ''हिमाद्रि तुंग शृंग से प्रबुद्ध शुद्ध भारती, स्वयं प्रभा समुज्जला स्वतंत्रता पुकारती''। कवि, उपन्यासकार, रचनाकार, लेखक, साहित्यकार सब जनता की चेतना जगाने का कार्य करते थे। जनता की परेशानी को केंद्र में रखकर सबको बताते थे और जनता भी इनसे प्रेरित होकर जुड़ती जाती थी। माखनलाल चतुर्वेदी द्वारा रचित पुष्प की अभिलाषा को वीरों के सम्मान के लिए दिखाया गया। ''चाह नहीं, मैं सुरबाला के गहनों में गूंथा जाऊँ, चाह नहीं प्रेमी–माला में बिंध प्यारी को ललचाऊँ'', मुझे तोड़ लेना वनमाली, उस पथ पर देना तुम फेंक, मातृ–भूमि पर शीश चढ़ाने, जिस पथ पर जाएं वीर अनेक।

क्रांतिकारियों का योगदान– क्रांतिकारी आंदोलन बंगाल से पहले महाराष्ट्र में प्रारंभ हो गया था। महाराष्ट्र में क्रांतिकारी आंदोलन के नेता चापेकर बंधु विनायक दामोदर सावरकर एवं उनके भाई गणेश सावरकर तथा श्यामजी कृष्ण वर्मा थे। ब्रिटिश सरकार के खिलाफ सशस्त्र विद्रोह का संगठन करने वाले फड़के भारत के पहले क्रांतिकारी थे। उन्होंने 1857 के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम की विफलता के बाद आज़ादी के महासमर की पहली चिनगारी जलाई। भगत सिंह, चंद्रशेखर आजाद, सचिंद्रनाथ सान्याल, खुदीराम बोस, सूर्य सेन, रास बिहारी बोस, जतिन दास आदि भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के दौरान सबसे प्रमुख क्रांतिकारी नेता थे। मंगल पांडे स्वतंत्रता संग्राम में सर्वप्रथम शहीद हुए थे। जिन्होंने अपनी शहादत दी थी। उनकी शहादत के बाद देश की जनता ने अंग्रेजों से लोहा लिया और देश को आजाद करवाया। भारत के शीर्ष स्वतंत्रता सेनानियों में से एक, जिनकी उपस्थिति के बिना भारत का स्वतंत्रता संग्राम अधूरा रह जाता, वे हैं सरदार वल्लभभाई पटेल, झांसी की रानी, बाल गंगाधर तिलक, राम प्रसाद बिस्मिल, ऊधम सिंह, बसुदेव बलवंत फड़गे, सुखदेव ठाकुर, हीरालाल शास्त्री, लालबहादुर शास्त्री, शांति घोस, राजगुरु, गणेश शंकर विद्यार्थी ,रानी लक्ष्मी बाई, बिनादास, बिपिन चंद्र पाल, दादा भाई नेरोजी, मदन मोहन मालवीय, बदरी दत्त पांडे, हर गोविंद पंत, गोविंद बल्लभ पंत, प्रेम बल्लभ पांडे, भोला दत्त पांडे। भारत 200 साल तक अंग्रेजों का गुलाम रहा। ये क्या जाने बलिदानों की कैसी भाषा होती है, ये क्या जाने कुरबानी की क्या परिभाषा होती है।

पत्रकारिता का सहयोग– हिंदी पत्रकारिता की शुरूआत बंगाल से हुई और इसका श्रेय राजा राममोहन राय को दिया जाता है। राजा राममोहन राय ने ही सबसे पहले प्रेस को सामाजिक उद्देश्य से जोड़ा। भारतीयों के सामाजिक, धार्मिक, राजनैतिक, आर्थिक हितों का समर्थन किया। समाज में व्याप्त अंधविश्वास और कुरीतियों पर प्रहार किए और अपने पत्रों के जरिए जनता में जागरूकता पैदा की। राजा राममोहन राय ने कई समाचार पत्र शुरू किए। जिसमें अहम हैं–साल 1816 में प्रकाशित 'बंगाल गजट'। पंडित जुगल किशोर शुक्ल के संपादन में निकलने वाले 'उदंत मार्तण्ड' को हिंदी का पहला समाचार पत्र माना जाता है। समाचार सुधा वर्षण, अभ्युदय, शंखनाद, हलधर, सत्याग्रह समाचार, युद्धवीर, क्रांतिवीर, स्वदेश, नया हिन्दुस्तान, कल्याण, हिंदी प्रदीप, ब्राह्मण, बुन्देलखण्ड केसरी, मतवाला जैसे दैनिक, साप्ताहिक, पाक्षिक पत्र तो सरस्वती, विप्लव, अलंकार, चांद, हंस, प्रताप, सैनिक, क्रांति, बलिदान, वालिंट्यर आदि जनवादी पत्रिकाओं ने आहिस्ता–आहिस्ता लोगों में सोये हुए वतनपरस्ती के जज्बे को जगाया और क्रांति का आह्वान किया। समाचार पत्रों ने सामाजिक जागरूकता पैदा करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई और अंग्रेजों के चंगुल से स्वतंत्रता प्राप्त करने की आवश्यकता पर जोर दिया। इन समाचार पत्रों की प्रधान भाषा हिन्दी ही थी।

अंग्रेजों ने 200 साल तक भारत पर राज किया तथा जुल्म किए और यहां की धन संपदा चुराकर अपने देश ले गए। भारत को हराना अंग्रेज, मुगल या किसी के भी बस का न तो कभी था, न है और न ही कभी होगा। देश को गुलामी की जंजीरों में कैद कराने में यहां के स्वार्थी राजाओं के निहित स्वार्थ शामिल थे। तुलसीदास जी ने लिखा है–''पराधीन सपनेहूं सुख नाहीं''। तुलसीदास जी कहते हैं कि किसी के अधीन रहकर जिंदगी में सुख संभव नहीं है। अतः मनुष्य को गुलाम कभी भी नहीं रहना चाहिए। इसी तरह गीता के अध्याय–02 तथा 04 में लिखा है कि हम किसी भी युद्ध से बच नहीं सकते है। समय–समय पर परिस्थिति विपरीत होती हैं तो मोर्चा लेना ही पड़ता है।

बिजली चोरी रोकने के लिए दंड का प्रावधान

केंद्र सरकार के साथ–साथ राज्य सरकारों के लिए भी बिजली की चोरी एक बड़ी समस्या रही है। सरकारें बिजली चोरी पर लगाम लगाने के लिए लगातार प्रयास कर रही है। इतना ही नहीं, सरकार ने कई सख्त कानून भी बना रखे हैं। इसके बावजूद बिजली की चोरी पर पूरी तरह से रोक नहीं लग पा रही है। बिजली चोरी करने वाले लोग तरह–तरह की तिगड़म लगाकर अभी भी धड़ल्ले से बिजली की चोरी कर हैं। शहरी इलाकों के साथ–साथ ग्रामीण इलाकों में रहने वाले लोग भी बिजली की चोरी में संलिप्त हैं।

बिजली अधिनियम–2003 में बिजली की चोरी करने वालों के लिए सजा का प्रावधान है। बिजली अधिनियम–2003 की धारा 135 और 138 के तहत बिजली चोरी करने वालों को दंडित किया जाता है। धारा 135 में बिजली चोरी और धारा 138 के तहत चोरी के इरादे से बिजली के मीटर से साथ छेड़छाड़ से जुड़े मामले आते हैं। बिजली चोरी के अपराध में संलिप्त दोषियों को जुर्माने के साथ–साथ जेल में भी सजा काटनी पड़ती है। कई मामलों में पहली बार बिजली चोरी करने वालों पर जुर्माना लगाया जाता है। यदि वह दोबारा बिजली की चोरी करता है तो उसे जुर्माना भरने के साथ जेल में सजा भी काटनी पड़ सकती है। इसके अलावा जुर्माने की राशि न भरने की स्थिति में भी दोषी को जेल भेजा जा सकता है। बिजली चोरी के संबंध में अलग–अलग राज्यों में अलग–अलग सजाएं दी जाती हैं।

नोएडा ट्विन टावर्स

(विस्फोट तकनीक के माध्यम से विध्वंस पर एक व्यापक अध्ययन)

लेख

शैला
उप प्रबंधक, एनसीआर कार्यालय, कौशाम्बी

यह लेख नोएडा शहर के एमराल्ड कोर्ट नामक बहुमंजिला हाउसिंग सोसाइटी में निर्मित भारत की सबसे ऊंची अवैध इमारत ''ट्विन टावर्स'' से संबंधित है जिसको 28 अगस्त, 2022 को एडिफिस इंजीनियरिंग फर्म द्वारा उच्चतम न्यायालय के आदेश के अनुसरण में नवीनतम तकनीक ''इम्प्लोसियन''–''झरना'' का उपयोग करके ध्वस्त कर दिया गया था। उच्चतम न्यायालय का यह आदेश सुपरटेक के खिलाफ आरडब्ल्यूए द्वारा 9 साल की कानूनी लड़ाई के बाद दिया गया। इस तकनीक की हैरान करने वाली बात यह है कि जिन ट्विन टावर्स को बनने में कई साल लग गए, उसे गिराने में केवल 9 से 12 सेकंड का ही समय लगा।

नोएडा प्राधिकरण ने एमराल्ड कोर्ट आवासीय परिसर शुरू करने के लिए 23 नवंबर, 2004 को रियल एस्टेट डेवलपर मैसर्स सुपरटेक लिमिटेड को 11.92 एकड़ का एक भूखंड आबंटित किया, जिसे मार्च, 2012 में सुपरटेक के द्वारा 14 के बजाय 15 भवनों और प्रत्येक भवन में 9 की जगह 11 फ्लोर बनाने की योजना में संशोधित किया गया।

इसके अतिरिक्त सुपरटेक ने भवन उप–नियमों का उल्लंघन करते हुए दर्शाये हुए क्षेत्रों से अधिक क्षेत्रों की खुदाई शुरू की, जहां एक शॉपिंग कॉम्प्लेक्स और उद्यानों के साथ–साथ दो नए 40 मंजिला केयेन और एपेक्स नाम के लगभग 102 मीटर के दो नए टावर भी इस परियोजना में जोड़ दिए और तुरंत निर्माण शुरू कर दिया। सुपरटेक और नोएडा अथॉरिटी की इस मिलीभगत को एमराल्ड कोर्ट (आरडब्ल्यूए) ने चुनौती दी और बाद में यही चुनौती कानूनी लड़ाई का केंद्र बिंदु बन गई।

तीव्र गति से होते हुए इस निर्माण कार्य को देखने के बाद आसपास के क्षेत्र के निवासियों ने सुपरटेक और नोएडा प्राधिकरण से संपर्क करते हुए इस निर्माण कार्य को रोकने की भरसक कोशिश की लेकिन इस परियोजना में कई लोगों की मिलीभगत के कारण लोगों को केवल निराशा ही हाथ लगी।

सुप्रीम कोर्ट ने यह कार्रवाई क्यों की?

2012 में, एमराल्ड कोर्ट (आरडब्ल्यूए) के निवासियों ने सुपरटेक द्वारा ग्रीन स्पेस के लिए निर्धारित किए गए क्षेत्र में पड़ रहे भवनों के मध्य 16 मीटर की न्यूनतम दूरी न बनाए रखते हुए नए टावरों का निर्माण करने जैसे मानदंडों के उल्लंघन का हवाला देते हुए इलाहाबाद उच्च न्यायालय का दरवाजा खटखटाया और ट्विन टावर्स को गिराने की मांग की।

जहां एक ओर वहां के निवासी न्याय प्राप्त करने के लिए इलाहाबाद उच्च न्यायालय चले गए तो वहीं दूसरी ओर ट्विन टावर का निर्माण कार्य जोरों पर चलता रहा। चूंकि मैसर्स सुपरटेक बिल्डर्स के ट्विन टावर्स के निर्माण कार्य ने नेशनल बिल्डिंग कोड ऑफ इंडिया, 2005 (एनबीसी) का उल्लंघन किया था, इसलिए, अप्रैल 2014 में पीड़ित निवासियों की याचिका पर उच्च न्यायालय ने नोएडा के इन ट्विन टावर्स को ध्वस्त करने का आदेश दे दिया।

भारतीय कानून के अनुसार, न्याय में भले ही देरी हो जाए, लेकिन फैसला गलत नहीं होना चाहिए और हर किसी को अपनी अपेक्षाओं को पूरा करने के लिए अदालत जाने का अधिकार है। इसलिए इस फैसले का विरोध करते हुए मैसर्स सुपरटेक ने राहत की मांग करते हुए सर्वोच्च न्यायालय का रुख किया और उच्च न्यायालय के फैसले को भारत के सर्वोच्च न्यायालय में चुनौती दी, जिसमें सुपरटेक द्वारा बताया गया कि इस निर्माण कार्य से सम्बंधित सभी जरूरी मंजूरी ले ली गई थी। अब कोर्ट के सामने दो दलीलें थीं। एक तरफ सुपरटेक का दावा है कि नोएडा ट्विन टावर्स का निर्माण सभी निर्धारित कानूनों के अनुपालन में है, दूसरी ओर एमराल्ड कोर्ट के निवासियों ने दावा किया कि ट्विन टावर्स बिल्डिंग मानदंडों के अनुसार नहीं बनाए जा रहे हैं।

कई दलीलें सुनने के बाद, 31 अगस्त, 2021 को, सुप्रीम कोर्ट ने मैसर्स सुपरटेक बिल्डर द्वारा स्थानीय अधिकारियों की मिलीभगत से बनाए गए ट्विन टावर्स के इस अवैध निर्माण को तीन महीने के भीतर इमारत के उल्लंघन के मद्देनजर सुरक्षित रूप से ध्वस्त करने और इस परियोजना से जुड़े लोगों को उनकी पूरी राशि 12 फीसदी की ब्याज दर के साथ वापस करने का आदेश दिया । इसके साथ ही एमराल्ड कोर्ट आरडब्ल्यूए को 2 करोड़ रुपये देने का भी आदेश दिया गया। इलाहाबाद उच्च न्यायालय के फैसले और ट्विन टावर्स के आसपास के निवासियों द्वारा प्रस्तुत याचिकाओं ने सुप्रीम कोर्ट के फैसले के कार्यान्वयन में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

ध्वस्तीकरण की प्रक्रिया

ट्विन टावर्स को गिराने के लिए 21 अगस्त, 2022 की तारीख तय की गई जिसे बाद में कुछ कारणवश बदलकर 28 अगस्त, 2022 कर दिया गया। एडिफिस इंजीनियरिंग–मुंबई की एक कंपनी, जिसने पहले ही केरल में इस तरह के ध्वस्तीकरण को अंजाम दिया था, को इन टावर्स को गिराने का काम सौंपा गया, जिसने आसपास की स्थिति का निरीक्षण करते हुए और सबकी सुरक्षा को ध्यान में रखकर टॉवरों को गिराने के लिए विस्फोट तकनीकी का इस्तेमाल किया। विस्फोट तकनीक के लिए इमारत में 7000 छिद्रों को ड्रिल किया गया और विस्फोट को ट्रिगर करने के लिए 20,000 सर्किट (लगभग) निर्धारित किए गए। इन अवैध टावरों को नष्ट करने के लिए लगभग 3,700 किलोग्राम विस्फोटक का इस्तेमाल किया गया।

इस तकनीक में यह निर्णय लिया गया कि धमाका जमीन से ऊपर की ओर शुरू होगा, भूतल पर रखे गए विस्फोट पहले किए जाएंगे, फिर पहली मंजिल, फिर दूसरी और इसी तरह बाकी की मंजिले गिराई जाएगी । यह सुनिश्चित किया गया कि जुड़वां टावरों की प्रत्येक मंजिल ढहने के साथ अंदर की ओर गिरे और उनका मलबा बाहर की ओर न उड़े। इस विध्वंस की प्रक्रिया को शुरू करने से पहले आसपास की जगह से वहां के निवासियों, पालतू जानवरों और वाहनों को हटा दिया गया एवं बिजली और गैस लाइनों को काट दिया गया। यहाँ तक कि लोगों की सुरक्षा को ध्यान में रखते हुए नोएडा–ग्रेटर नोएडा एक्सप्रेसवे को लगभग 30 से 45 मिनट के लिए बंद कर दिया गया। अत्यधिक वायु प्रदूषण से बचने के लिए वाटर स्प्रिंकलर और एंटी–स्मॉग गन का भी इस्तेमाल किया गया।

ट्विन टावर्स के विध्वंस का प्रभाव

इस विध्वंस से लगभग 80,000 टन धूल और मलबा निकला जो न केवल पर्यावरण बल्कि आसपास के निवासियों पर भी अपनी छाप छोड़ेगा। उन्हें गले में खराश, नाक बंद होना, खांसी, सांस लेने में तकलीफ और सीने में दर्द और कुछ अन्य हल्के लक्षणों जैसी सांस की समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है। विध्वंस के तत्काल प्रभाव से आंखों की समस्याएं, खांसी, छींक और धूल से एलर्जी हो सकती है। यह उन लोगों के लिए खतरनाक हो सकता है जिन्हें पहले से ही अस्थमा और क्रॉनिक ऑब्सट्रक्टिव पल्मोनरी डिजीज जैसी फेफड़ों की समस्या है।

लंबे समय तक मलबे को जमीन पर छोड़ना भी वहां की जमीन और हवा के लिए ठीक नहीं है। भूमि की गिरावट और उर्वरता प्रभावित होगी। मलबे का जमाव भूजल को भी प्रभावित करेगा, जिससे पेट, किडनी और लीवर से संबंधित स्वास्थ्य समस्याएं हो सकती हैं। साथ ही आसपास के क्षेत्र के लोगों को मलबा काफी समय तक पड़ा रहने के कारण मानसिक तनाव का सामना करना पड़ेगा।

भारतीय कानून की ताकत – आज हम सभी अपने देश के कानून के सामने इस विश्वास के साथ सिर झुकाते हैं कि भविष्य में कोई भी अवैध कार्य करने से पहले ट्विन टावर्स को याद करेगा। ट्विन टावर्स का आज का हाल गवाह है कि हमारा कानून कितना ताकतवर है। टावरों को गिराने के हाईकोर्ट के फैसले से न केवल आसपास के लोगों बल्कि पूरी जनता का हमारे देश के न्याय पर विश्वास मजबूत हुआ है। फैसले से न केवल अवैध घटनाओं में कमी आएगी बल्कि स्थानीय लोगों की मानसिकता भी बदलेगी और भारतीय कानून में उनका विश्वास बढ़ेगा।

(यह लेख विभिन्न समाचार पत्रों (लाइवमिंट, जागरण जोश, द हिंदू), पत्रिकाओं (इंडिया टुडे, जीके टुडे) के ऑनलाइन संसाधनों के माध्यम से एकत्रित जानकारी पर आधारित है)।

सौर से शौर्य

(सौर ऊर्जा से लिखेंगे शौर्य गाथा)

लेख

आशुतोष कुमार आनंद
वरि. प्रबंधक (मा.सं.एवं प्रशा.), एनसीआर, कौशांबी

भारत समृद्ध सौर ऊर्जा संसाधनों वाला देश है। भारत में अक्षय ऊर्जा स्रोतों में अभूतपूर्व क्रांति का अभ्युदय हो रहा है। भारतवर्ष अब शनै–शनैः विद्युत उत्पादन के पारंपरिक स्रोतों से आगे बढ़कर ऊर्जा के अन्य कई अक्षय स्रोतों पर ध्यान एवं प्रयास केन्द्रित कर रहा है जिससे पर्यावरण एवं अन्य संसाधनों को नुकसान पहुंचाए बिना विकास की गाथा लिखी जा सकती है।

सूर्य एक दिव्य शक्ति स्रोत, शान्त व पर्यावरण सुहृद प्रकृति के स्वामी हैं। एक मोटे अनुमान के अनुसार भारत के भौगोलिक भाग पर पाँच हजार लाख किलोवाट घंटा प्रति वर्ग मीटर के बराबर सौर ऊर्जा आती है। वहीं, एक मेगावाट सौर ऊर्जा के लिए करीब तीन हेक्टेयर भूमि की आवश्यकता होती है। इस दृष्टिकोण से भारत में सौर ऊर्जा के मोर्चे पर विपुल संभावनाएं हैं। देश की ऊर्जा जरूरतों को पूरा करने के लिए न केवल बुनियादी ढाँचा मजबूत करने की जरूरत है, बल्कि ऊर्जा के नए स्रोत तलाशना भी जरूरी है। ऐसे में सौर ऊर्जा क्षेत्र, भारत के ऊर्जा उत्पादन और मांगों के बीच की बढ़ती खाई को बहुत हद तक पाट सकता है।

इस कारण सौर ऊर्जा नवीकरणीय ऊर्जा स्रोत के रूप में बड़ी तेजी से उभरा है । विज्ञान व संस्कृति के एकीकरण तथा संस्कृति व प्रौद्योगिकी के उपस्करों के प्रयोग द्वारा सौर ऊर्जा भविष्य के लिए अक्षय ऊर्जा का स्रोत साबित होने वाली है। सौर ऊर्जा, जो रोशनी व उष्मा दोनों रूपों में प्राप्त होती है, इसका उपयोग कई प्रकार से हो सकता है। विगत कुछ वर्षों में सरकार द्वारा नवीकरणीय ऊर्जा स्रोत के क्षेत्र में कई उल्लेखनीय प्रयास किए गए हैं । भारत सरकार ने 2022 के अंत तक 175 गीगावाट नवीकरणीय ऊर्जा क्षमता का लक्ष्य निर्धारित किया है। इसमें पवन ऊर्जा से 60 गीगावाट, सौर ऊर्जा से 100 गीगावाट, बायोमास ऊर्जा से 10 गीगावाट और लघु जलविद्युत परियोजनाओं से 5 गीगावॉट शामिल है। सौर ऊर्जा उत्पादन में सर्वाधिक योगदान रूफटॉप सौर ऊर्जा (40 प्रतिशत) और सोलर पार्क (40 प्रतिशत) का है। यह देश में बिजली उत्पादन की स्थापित क्षमता का 16 प्रतिशत है। सरकार का लक्ष्य इसे बढ़ाकर स्थापित क्षमता का 60 प्रतिशत करना है। वर्ष 2035 तक देश में सौर ऊर्जा की मांग सात गुना तक बढ़ने की संभावना है।

यदि भारत में सौर ऊर्जा का इस्तेमाल बढ़ाया जा सकेगा तो इससे जीडीपी दर भी बढ़ेगी और भारत सुपरपावर बनने की राह पर भी आगे बढ़ सकेगा। सौर ऊर्जा को बढ़ावा देने में सरकार ने कई पहल की हैं जिनमें मुख्यतः निम्नलिखित शामिल हैं :

– राष्ट्रीय सौर ऊर्जा मिशन (National Solar Mission) : जिसका उद्देश्य फॉसिल आधारित ऊर्जा विकल्पों के साथ सौर ऊर्जा को प्रतिस्पर्द्धा बनाने के अंतिम उद्देश्य के साथ बिजली उत्पादन एवं अन्य उपयोगों के लिये सौर ऊर्जा के विकास एवं उपयोग को बढ़ावा देना है।

– राष्ट्रीय सौर ऊर्जा मिशन का लक्ष्य दीर्घकालिक नीति, बड़े स्तर पर परिनियोजन लक्ष्यों, महत्वाकांक्षी अनुसंधान एवं विकास तथा महत्वपूर्ण कच्चे माल, अवयवों तथा उत्पादों के घरेलू उत्पादन के माध्यम से देश में सौर ऊर्जा के उत्पादन की लागत को कम करना है।

– इसका लक्ष्य दीर्घकालिक नीति, बड़े स्तर पर परिनियोजित लक्ष्यों, महत्वाकांक्षी अनुसंधान एवं विकास तथा महत्वपूर्ण कच्चे माल, अवयवों तथा उत्पादों के घरेलू उत्पादन के माध्यम से देश में सौर ऊर्जा उत्पादन की लागत को कम करना है। भारत सरकार ने देश की फोटोवोल्टिक क्षमता को बढ़ाने के लिए सोलर पैनल निर्माण उद्योग को 210 अरब रुपए की सरकारी सहायता देने की योजना बनाई है। PRAYAS&Pradhan Mantri Yojana for

Augmenting Solar Manufacturing नामक इस योजना के तहत सरकार ने वर्ष 2030 तक कुल ऊर्जा का 40 प्रतिशत हरित ऊर्जा से उत्पन्न करने का लक्ष्य रखा है।

– इंटरनेशनल सोलर अलायन्स (ISA) की स्थापना की गई है। फ्रेमवर्क में वर्ष 2030 तक नवीकरणीय ऊर्जा, ऊर्जा क्षमता और उन्नत व स्वच्छ जैव–ईंधन प्रौद्योगिकी सहित स्वच्छ ऊर्जा के लिये शोध और प्रौद्योगिकी तक पहुँच बनाने हेतु अंतरराष्ट्रीय सहयोग बढ़ाने तथा ऊर्जा अवसंरचना एवं स्वच्छ ऊर्जा प्रौद्योगिकी में निवेश को बढ़ावा देने का लक्ष्य तय किया गया है। आईएसए के प्रमुख उद्देश्यों में 1000 गीगावाट से अधिक सौर ऊर्जा उत्पादन की वैश्विक क्षमता प्राप्त करना है।

सरकार द्वारा सोलर रूफटॉप योजना को शुरू करके मूर्त रूप दिया गया है एवं सरकार द्वारा ग्रिड कनेक्टेड रूफटॉप और छोटे सौर ऊर्जा संयंत्र कार्यक्रमों का भी कार्यान्वयन किया जा रहा है, जिनके तहत आवासीय, सामाजिक, सरकारी/पीएसयू और संस्थागत क्षेत्रों में सीएफए/प्रोत्साहन के जरिये 2100 मेगावाट की क्षमता स्थापित की जा रही है। इस कार्यक्रम के तहत सामान्य श्रेणी वाले राज्यों में आवासीय, संस्थागत एवं सामाजिक क्षेत्रों में इस तरह की परियोजनाओं के लिये बेंचमार्क लागत के 30 प्रतिशत तक और विशेष श्रेणी वाले राज्यों में बेंचमार्क लागत के 70 प्रतिशत तक केंद्रीय वित्तीय सहायता मुहैया कराई जा रही है। सरकार द्वारा कुछ अन्य नीतिगत उपाय में निम्नलिखित शामिल हैं:

- हरित ऊर्जा गलियारा परियोजना के माध्यम से बिजली पारेषण नेटवर्क का विकास।
- टैरिफ आधारित प्रतिस्पर्धी बोली प्रक्रिया के माध्यम से सौर ऊर्जा की खरीद के लिये दिशा–निर्देश।
- रूफटॉप परियोजनाओं के लिये बड़े सरकारी परिसरों/भवनों की पहचान करना।
- स्मार्ट सिटी के विकास के लिये दिशा–निर्देशों के तहत रूफटॉप सोलर एवं 10 प्रतिशत नवीकरणीय ऊर्जा के प्रावधान को अनिवार्य बनाना।
- सौर परियोजनाओं के लिए अवसंरचना दर्जा, कर मुक्त सोलर बांड जारी करना तथा दीर्घकालिक ऋण उपलब्ध कराना।

टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड जिसे मुख्यतः जल विद्युत पर आधारित कंपनी माना जाता था, ने सौर ऊर्जा के क्षेत्र में अनेक उपलब्धियां हासिल की हैं। टीएचडीसी ने शुरुआत रूफटॉप सोलर से की एवं निगम ने कई कार्यालयों के भवनों में रूफ टॉप सोलर पैनल्स स्थापित किए। निगम भारत के अन्य राज्यों में सौर ऊर्जा का विस्तार करते हुए कई अन्य निगमों के साथ संयुक्त रूप से सोलर पार्कों की स्थापना के लिए जोर–शोर से कार्य कर रहा है। यूपीनेडा के साथ टस्को (TUSCO) नामक संयुक्त उद्यम की स्थापना कंपनी का दूसरा बड़ा कदम है। इस संयुक्त उद्यम के माध्यम से कुल 2000 मेगावाट क्षमता की अल्ट्रा मेगा रिन्यूएबल एनर्जी पावर पार्क विकसित किया जाना है जिसमें 600–600 मे.वा. के सोलर पार्कों की स्थापना ललितपुर एवं झाँसी में की जानी है एवं 800 मेगावाट के सोलर पार्क की स्थापना चित्रकूट (उत्तर प्रदेश) में की जानी है। इन सोलर पार्क पर कार्य तेजी से हो रहा है। टीएचडीसीआईएल ने राजस्थान में 1500 मेगावाट यूएमआरईपीपी स्थापित करने में भी अपनी अभिरूचि दिखाई है जिसे सचिव (एमएनआरई) राजस्थान सरकार द्वारा सहमति प्रदान कर दी गयी है। इसके अतिरिक्त निगम ने राजस्थान में 10,000 मेगावाट की अक्षय ऊर्जा पार्कों/परियोजनाओं की स्थापना के लिए 40,000 करोड़ रुपये के अनुमानित निवेश के साथ 10,000 मेगावाट के आशय पत्र (एलओआई) पर हस्ताक्षर किए तथा एमओयू पर भी हस्ताक्षर हो चुके हैं। निगम कासरगोड (केरल) में 50 मेगावाट के सोलर पावर प्रोजेक्ट को सफलतापूर्वक संचालित कर रहा है।

टीएचडीसीआईएल द्वारा देश के विभिन्न हिस्सों के साथ–साथ पड़ोसी देशों में जलविद्युत, पंप भंडारण और नवीकरणीय ऊर्जा योजनाओं के विकास की संभावना को भी तलाशा जा रहा है। टीएचडीसीआईएल भारत सरकार के राष्ट्रीय हाइड्रोजन मिशन के तहत परियोजनाओं को शुरू करने और उनमें भाग लेने के लिए भी प्रयासरत है। सिंचाई और जलविद्युत परियोजनाओं के मौजूदा जलाशयों और नहरों पर तैरते हुए सौर संयंत्र शुरू करने के लिए भी प्रयास किए जा रहे हैं। इन प्रयासों के परिणामस्वरूप टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड अक्षय ऊर्जा के क्षेत्र की एक अग्रणी कंपनी के रूप में अपना नाम स्थापित करने में अवश्य ही सफल होगी।

आंवला के औषधीय गुण

(पतंजलि योगपीठ एवं 1 एमजी से साभार संकलित)

स्वास्थ्य परिचर्या

आंवला को आयुर्वेद में अमृतफल या धात्रीफल कहा गया है। वैदिक काल से ही आंवला (phyllanthus emblica) का प्रयोग औषधि के रूप में किया जा रहा है। पेड़–पौधे से जो औषधि बनती है उसको काष्ठौषधि कहते हैं और धातु–खनिज से जो औषधि बनती है उनको रसौषधि कहते हैं। इन दोनों तरह की औषधि में आंवला का इस्तेमाल किया जाता है। आंवला के प्रयोग से अनगिनत फायदे होते हैं। इनमें से कुछ का विवरण निम्नानुसार है :–

बालों की समस्या में आंवला के फायदे – सफेद बालों की समस्या से हर उम्र के लोग जूझ रहे हैं। आंवला के मिश्रण का लेप लगाने से कुछ ही दिनों में बाल काले हो जाते हैं। 30 ग्राम सूखे आंवला, 10 ग्राम बहेड़ा, 50 ग्राम आम की गुठली की गिरी और 10 ग्राम लौह भस्म लें। इन्हें रात भर लोहे की कढ़ाई में भिगोकर रखें। अगर कम उम्र में बाल सफेद हो रहे हैं तो इस लेप को रोज लगाएं। कुछ ही दिनों में बाल काले होने लगते हैं।

मोतियाबिंद में आंवला के फायदे – आमतौर पर उम्र के बढ़ने के साथ कई लोगों को मोतियाबिंद की परेशानी होने लगती है। इससे बचने के लिए आंवला के साथ रसांजन, मधु और घी मिला लें। इस मिश्रण को आंखों में लगाने से आंखों के पीलेपन और मोतियाबिंद में फायदा मिलता है।

अपच में लाभकारी आंवला – कई बार असमय खाने या कुछ भी गलत खा लेने पर अपच या इंडाइजेशन हो जाता है। इसके लिए आंवला को पका लें। इसमें उचित मात्रा में काली मिर्च, सोंठ, सेंधा नमक, भूना जीरा और हींग मिला लें। इसे छाया में सुखाकर सेवन करने से भूख लगती है, तथा कब्ज और अपच जैसी समस्याओं से राहत मिलती है।

मधुमेह में आंवला के फायदे – वर्तमान में डायबिटीज से अनेक लोग ग्रस्त हैं। इसके लिए आंवला, हरड़, बहेड़ा, नागरमोथा, दारुहल्दी एवं देवदारु लें। इनको समान मात्रा में लेकर पाउडर बना लें। इसे 10–20 मिली की मात्रा में सुबह–शाम डायबिटीज के रोगी को पिलाने से लाभ मिलता है।

गठिया के दर्द से दिलाये राहत आंवला – गठिया में जोड़ों में दर्द और सूजन हो जाती है। इस परेशानी से सबसे ज्यादा बड़े–बूढ़े ग्रस्त होते हैं। इसमें 20 ग्राम सूखे आंवले और 20 ग्राम गुड़ लें। इसे 500 मिली पानी में उबाल लें। 250 मिली पानी शेष रहने पर छानकर सुबह शाम पिएं। इससे गठिया में लाभ होता है। इस दौरान नमक का सेवन ना करें।

बढ़ती उम्र के प्रभाव को रोकने के लिए आंवला के फायदे – बढ़ती उम्र के प्रभाव को आंवला के सेवन के रोका जा सकता है। आयुर्वेद के अनुसार आंवला को रसायन माना गया है। यहाँ पर रसायन का मतलब है कि जिसके सेवन से शरीर की रोग प्रतिरोधक शक्ति बढ़ती है। रसायन के सेवन से शरीर में होने वाले डिजेनरेटिव को रोकने में सहायता मिलती है जिससे बढ़ती उम्र के लक्षण कम होने लगते है।

हड्डियों को मज़बूत बनाने में आंवला के फायदे – आंवला रसायन होने के कारण शरीर की सभी धातुओं को पोषण देता है। अतः यह अस्थि धातु को भी पोषण देकर हड्डियों को मजबूती प्रदान करता है।

हिंदी अनुभाग की ओर से.....

कुछ टिप्पणियों के हिंदी पर्याय

जिनकी कार्यालय में सदैव आवश्यकता होती है।

क्रम सं.	अंग्रेजी टिप्पणी	हिंदी टिप्पणी
1	A revised draft memorandum is put as desired by.	की इच्छानुसार ज्ञापन का परिशोधित प्रारूप प्रस्तुत है ।
2	Accepted for payment.	भुगतान के लिए स्वीकृत
3	Action has already been taken in the matter.	इस मामले में कार्रवाई की जा चुकी है।
4	Action has not yet been initiated.	कार्रवाई अभी शुरू नहीं की गई है।
5	Action may be taken as proposed.	यथाप्रस्तावित कार्रवाई की जाए।
6	Administrative approval may be obtained.	प्रशासनिक अनुमोदन प्राप्त किया जाए।
7	Application may be rejected.	आवेदन अस्वीकार कर दिया जाए।
8	As in force for the time being.	जैसा कि फिलहाल लागू है।
9	Call for an explanation.	जवाब तलब किया जाए।
10	Carried forward.	अग्रेनीत
11	Competent authority's sanction is necessary.	सक्षम प्राधिकारी की मंजूरी आवश्यक है।
12	Consolidated report may be furnished.	समेकित रिपोर्ट प्रस्तुत की जाए।
13	Day to Day administrative work.	दैनंदिन प्रशासनिक कार्य।
14	Deduction at source.	स्रोत पर कटौती।
15	Delay in returning the file is regretted.	फाइल को लौटाने में हुई देरी के लिए खेद है।
16	Discrepancy may be reconciled.	विसंगति का समाधान कर लिया जाए ।
17	Do the needful.	आवश्यक कार्रवाई करें ।
18	Draft has been amended accordingly.	प्रारूप तदनुसार संशोधित कर दिया गया है।
19	Draft reply is put up for approval.	उत्तर का प्रारूप अनुमोदन के लिए प्रस्तुत है।
20	Follow up action.	अनुवर्ती कार्रवाई।
21	I have been directed to inform you	मुझे निदेश हुआ है कि मैं आपको सूचित करूं।
22	I have the honour to say.	सादर निवेदन है।
23	Issue reminder urgently.	तुरंत अनुस्मारक भेजिए ।
24	Kindly acknowledge.	कृपया पावती भेजिए।
25	May be informed accordingly.	तदनुसार सूचित कर दिया जाए।
26	Needful has been done.	जरूरी कार्रवाई कर दी गई है।
27	No decision has so far been taken in the matter.	इस मामले पर अभी तक कोई निर्णय नहीं हुआ है।

28	No further action is called for	आगे कोई कार्रवाई अपेक्षित नहीं है।
29	Please circulate and file.	कृपया सभी को दिखाकर फाइल कर दीजिए।
30	Please put up a self – contained note (summary)	स्वतः पूर्ण टिप्पणी (सारांश) प्रस्तुत कीजिए।
31	Please see the preceding notes.	कृपया पिछली टिप्पणियां देख लें।
32	Please speak.	कृपया बात करें।
33	Retrospective effect cannot be given on this order.	इस आदेश को पीछे की तारीख से लागू नहीं किया जा सकता ।
34	Seen and returned with thanks.	देखकर सधन्यवाद वापस किया जाता है ।
35	The bill is returned herewith with the following objection.	बिल निम्नलिखित आपत्तियों के साथ वापस किया जाता है।
36	No cause to modify the orders already passed.	पूर्व के आदेशों में परिवर्तन करने का कोई कारण नहीं है ।
37	The proposal is self explanatory.	प्रस्ताव अपने आप में स्पष्ट है।
38	The proposal is quite in order.	यह प्रस्ताव बिल्कुल नियमानुकूल है ।
39	The receipt of the letter has been acknowledged.	पत्र की पावती भेज दी गई है ।
40	The required papers are placed below.	अपेक्षित कागज–पत्र नीचे रखे हैं।
41	This may be kept pending till a decision is taken on the main file.	मुख्य फाइल पर निर्णय होने तक इसे रोके रखिए।
42	This may please be treated as urgent.	कृपया इसे अविलंबनीय समझे।
43	We agree as a very special case. This should not, however, be quoted as a precedent.	इसे बहुत विशेष मामला मानकर हम सहमति देते हैं। परंतु इसका आगे उदाहरण के रूप में उल्लेख न किया जाए ।
44	We have no remarks to offer.	हमें कोई टिप्पणी नहीं करनी है ।
45	He should report to the branch as soon as he receives this memorandum.	वे इस ज्ञापन के प्राप्त होते ही तुरंत शाखा में डयूटी पर आ जाएं।
46	We hope that you will not force us to take untoward steps against you.	आशा है, आप हमें कोई अप्रिय कदम उठाने के लिए बाध्य नहीं करेंगे ।
47	On receipt of the above documents, we will proceed further.	उक्त दस्तावेज प्राप्त होने पर हम आगे कार्रवाई करेंगे ।
48	To adjourn sine die.	अनिश्चितकाल के लिए स्थगित करना ।
49	It is a matter of regret that statements of above nature which are already overdue have not been submitted by your branch till date.	खेद की बात है कि उपर्युक्त प्रकार के विवरण, जो हमें बहुत पहले मिल जाने चाहिए थे, आपकी शाखा ने हमें अभी तक प्रस्तुत नहीं किए हैं।
50	While sending to us the relative policy the premium amount to be remitted by us may kindly be advised.	संबंधित पॉलिसी भेजते समय कृपया हमें यह भी बताएं कि हमें प्रीमियम की कितनी राशि भेजनी है?

जीवन में अब रंग तेरा है

कविता

राजेन्द्र सिंह नेगी
वरि. अधिकारी (मा.सं. प्रशा.), ऋषिकेश

सच वही है जो संग तेरा है, जीवन में अब रंग तेरा है।
रास्ता है अब कुछ जाना पहचाना, जीवन को सुर दे जाता है।

संसो के तरों से, गीत बजता जाता है।
कितनी भी आंधी आए, तेरे हाथों में मेरा हाथ रहे।

दुनिया क्या बिगाडेगी, जब कंधो पर तेरा हाथ रहे।
अब मिल के एहसास यही होता है कि जो कुछ भी है वो सब तेरा है।

सच वही है जो संग तेरा है, जीवन में अब रंग तेरा है।
अब मैं अपनी बात क्या लिखूं, तेरे प्यार का एहसास क्या लिखूं।

क्या उगते सूरज की बात लिखूं, या खुशबू में गुलाब लिखूं।
अपनी जीत लिखूं या अपनी हार लिखूं।

कहना–सुनना, लिखना–लिखाना क्या, अब तेरा होना ही जीवन मेरा है।
क्योंकि जीवन में साथ अब तेरा है।

सच वही है जो संग तेरा है, जीवन में अब रंग तेरा है।
मिलकर तुझसे बात समझ आई, असली प्यार की गहराई नजर आई।

अंधेरे में भी सब नजर आता है, तेरे प्यार का एहसास नजर आता है।
रात तेरी, दिन तेरा, धरती तेरी, आकाश तेरा।

इस जीवन में प्यार तेरा है, इन संसो का उपहार तेरा है।
सच वही है जो संग तेरा है, जीवन में अब रंग तेरा है।

प्रेरक/प्रेरणा श्रोत :– **श्री प्रेमरावत,** *अंतरराष्ट्रीय शान्ति वक्ता*

कविता

अमर प्रेम

कुमार अनुपम
वैज्ञानिक–बी,
केंद्रीय लुग्दी एवं कागज अनुसंधान संस्थान,
सहारनपुर–247001, उ.प्र.

इक दिन चिता पर,
जल रही होगी लहर कर,
मृदु मिट्टी की यह काया।
मिल जाएगी उस दग्ध अनल में,
वह अग्नि प्रेम की प्रेयसी,
मेरे हृदय में जो था तूने जगाया।

उठेगा वाष्प बन–बन कर, रुधिर जब धमनियों से,
समा जाएगी हवा में हर तरफ,
वह खुशबू प्रेम की प्रेयसी,
मेरे नस–नस में जो था तूने मिलाया।

अस्थियाँ मेरी बहाई जाएँगी, जब भागीरथी की गोद में,
मिल जाएगी इक–इक बूंद में उसके,
वह मिठास प्रेम की प्रेयसी,
मेरे कण–कण में जो था तूने घुलाया।

भस्म मेरी चिता की जब,
हो समाहित जाएगी इला में,
भर जायेगी रज–रज में उसके,
वह उर्वरता प्रेम की, प्रेयसी
मेरे मन में जो था तूने पटाया।

अंततः आत्मा मेरी, जब गगन में जाएगी,
और ज्योति मेरे प्राण की, महापुंज में मिल जाएगी,
छा जाएगी ब्रह्माण्ड में, वह पावनता प्रेम की, प्रेयसी,
मेरे कलुषित जीवन को, जिससे था तूने धुलाया।

अतः रहूँ भले न इस दुनिया में,
रहे भला न मेरा कोई प्रमाण,
रहेगा व्याप्त मगर प्रेम तुम्हारा,
प्रेयसी, बन सरिता, सुगंध, अग्नि, अवनि और आसमान।

पूर्णिमा का चांद

श्याम सुन्दर श्रीवास्तव "कोमल"
व्याख्याता हिन्दी, रावगंज, कालपी
जिला – जालौन (उ.प्र.) पिन – 285204

शरद पूर्णिमा का चांद,
कितना निर्मल है,
धवल है, शीतल है,
कितना सुख देता है,
मुझे बहुत भाता है,
जब इसे देखता हूं,
तुम्हारा चेहरा सामने आता है ।

पूर्णिमा के चांद की,
तुमसे कोई समानता नहीं है,
वह तो टकटकी लगाकर देखता है,
कभी कुछ बोलता नहीं है,
मुस्कुराता भी नहीं है,
हँसता भी नहीं है,
गाता भी नहीं है ।

हां! लोग कहते हैं कि,
यह अमृत बरसाता है,
किंतु यह कैसा अमृत है,
जो उसी पर लगे दाग को,
कभी धो नहीं पाता है।

मेरा चांद तो तुम हो,
जब तुम मुस्कराते हो,
तो अमृत बरसता है,
और मेरा सारा जीवन,
अमृतमय हो जाता है,
मधुमय हो जाता है।

मेकअप

कविता

ए.सी. गुप्ता
वरि. प्रबंधक (नियो.एवं तक.प्रको.), कोटेश्वर

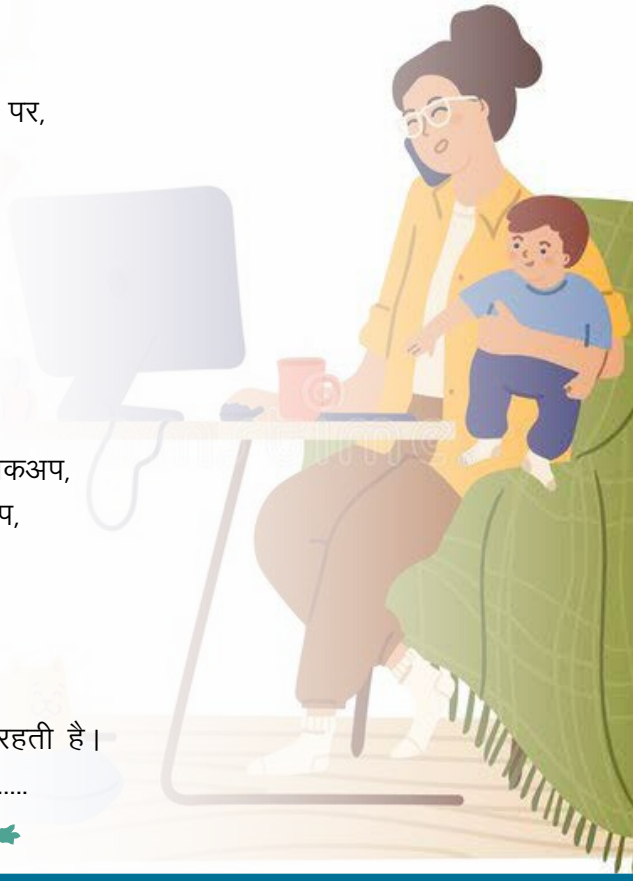

लोग कहते हैं कि औरतें बहुत मेकअप करती हैं।
सच ही तो है औरतें सिर्फ चेहरे पर ही नहीं,
बल्कि घर, परिवार, बच्चे, पति, समाज सभी की कमियों पर,
हमेशा मेकअप ही करती रहती हैं.....।
दोस्तों की गलतियों पर मेकअप,
बेहतर शिक्षा न मिलने पर माता–पिता पर मेकअप,
शादी होने पर ससुराल वालों के तानों पर मेकअप,
मायके की कमियों पर मेकअप,
पति की बेवफाई पर मेकअप,
रिश्तों की बदनीयती पर मेकअप,
बच्चों की कमियों पर मेकअप, और उनकी गलतियों पर मेकअप,
बुढ़ापे में दामाद के द्वारा किये गये अनादर पर मेकअप,
तो बहु की बेरूखी पर मेक अप,
पोता पोती की शरारतों पर मेकअप,
और आखिर में बुढ़ापे में परिवार में,
अस्तित्वहीन होने पर मेकअप.....।
एक औरत जन्म से लेकर मृत्यु तक मेक अप ही तो करती रहती है।
तभी तो कहते हैं बिना मेकअप के अधूरी नारी.....

तीन पहर तो बीत गये

कविता

ए.सी. गुप्ता
वरि. प्रबंधक (नियो. एवं तक. प्रको.), कोटेश्वर

जीवन हाथों से फिसल गया, बस खाली मुठ्ठी बाकी है।
सब कुछ पाया जीवन में, फिर भी इच्छाएं बाकी हैं।
दुनिया से हमने बचा पाया, यह लेखा–जोखा बहुत हुआ।
इस जग ने हमसे क्या पाया, बस ये रचनाएं बाकी है।
इस भाग दौड़ की दुनिया में,हमको एक पल का होश नहीं।
वैसे तो जीवन सुखमय है, पर फिर भी क्यों संतोष नहीं?
क्या यूं ही जीवन बीतेगा? क्या यूं ही साँसे बंद हो जाएंगी?
औरों की पीड़ा देख समझ, कब अपनी आँख नम हो जाएंगी?
मन के अन्दर में कहीं छुपे, इस प्रश्न का उत्तर बाकी है।

आजादी

कविता

रिंकी नेगी
डीईओ, उपनल (मा.सं.–वेलफेयर), ऋषिकेश

यूँ नोच खाते वो बेटियों को,
पूछो उनसे क्यों?
तो कहते आजाद है हम,
नशे में सुलगती उनकी वो मदहोश जवानी,
ऐसा करते हो क्यों?
तो कहते आजाद हैं हम,
बांध दिया इस आजादी ने,
हम सबको अपनी कैद में,
सबको बस अपनी आजादी प्यारी,

अरे... आजाद होना इनसे सीखो,
हैं भारत के जो वीर सपूत,
हैं आजादी इनको मोह माया से,
आजाद ये अपने स्वार्थ से,
धूप छाँव से आजाद ये,
दर्द से भी आजाद हैं,
धन्य है वो कोख जिससे जन्मा
एक फौजी फौलाद है।

सेवानिवृत्ति, जीवन सफर में एक पड़ाव

कविता

यशवंत सिंह नेगी,
कनि.अधिकारी (हिंदी), केएसटीपी, खुर्जा

गुजरे हुए हसीन लम्हों की खट्टी–मीठी यादों से,
आज दिल में एक भारी कसक तो होगी जरूर ।।
सफर के कारवां में पीछे छूट गए जो संगी–साथी,
यादों से उनकी, आज पलकें नम तो होंगी जरूर।।

जवानी की दहलीज पर हसीं ख्वाबों की ताबीर से,
झूलती जिंदगी को रूबरू तो देखा होगा जरूर।।
मोहब्बत की आरजू में दिल में प्रियसी की चाहत से,
विवश जिन्दगी को तरसते हुए तो देखा होगा जरूर ।।

खुशी–गम की धूप–छावों की कशमकश से,
जिन्दगी को यूं गुजरते हुए तो देखा होगा जरूर।।
संघर्षों के बदलते हुए मौसम की करवट से,
यूं जिन्दगी को जूझते हुए तो देखा होगा जरूर।।

सफर के पड़ावों में काली घटाओं के झुरमुट से,
आंख मिचोली करती जिन्दगी को देखा होगा जरूर।।
कभी फूलों की कोमलता, कभी कांटों की चुभन से,
खट्टे–मीठे अनुभवों का स्वाद तो लिया होगा जरूर।।

जीवन सफर का यह पड़ाव, एक अर्धविराम ही सही,
दुआएं है कि अगला सफर भी खुशगवार होगा जरूर।।
जीवन के हर किरदार में जुड़ी भावनात्मक संवेदना से,
आज हमसे बिछुड़ने की अथाह पीड़ा तो होगी जरूर।।

गुजरे हुए हसीन लम्हों की खट्टी–मीठी यादों से,
आज दिल में एक भारी कसक तो होगी जरूर।।

हिंदी कार्यशालाओं का आयोजन

कारपोरेट कार्यालय, ऋषिकेश

प्रथम कार्यशाला

हिंदी कार्यशाला के उद्घाटन सत्र में प्रतिभागियों को संबोधित करते उप प्रबंधक (राजभाषा), श्री पंकज कुमार शर्मा

कारपोरेट कार्यालय, ऋषिकेश में 08 सितंबर, 2022 को हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला में कनिष्ठ अधिकारी, कनिष्ठ अभियंता ग्रेड में पदोन्नत हुए कर्मचारी सम्मिलित हुए। कार्यक्रम का शुभारंभ श्री ईश्वरदत्त तिग्गा, अपर महाप्रबंधक (मा.सं.एवं प्रशा.) की अध्यक्षता में हुआ। श्री तिग्गा ने इस अवसर पर अपने संबोधन में कहा कि पदोन्नति के बाद सभी कर्मचारियों की जिम्मेदारियां और भी अधिक बढ़ गई है। अपने मूल कार्य के साथ–साथ यह ध्यान रखना भी आवश्यक है कि सभी सरकारी कामकाज में हिंदी का अधिकाधिक उपयोग हो और हम राजभाषा विभाग द्वारा पत्राचार के लिए नियत किए गए लक्ष्यों को पूरा करें। श्री पंकज कुमार शर्मा, उप प्रबंधक (राजभाषा) ने अपने व्याख्यान में हिंदी में नोटिंग एवं ड्राफ्टिंग करने की जानकारी दी। उन्होंने कहा कि हमारा पत्राचार प्रभावशाली होने के साथ–साथ परिणामोत्पादक होना चाहिए। आजकल कार्यालय का अधिकतर कार्य ई–ऑफिस के माध्यम से हो रहा है जिसके लिए यूनिकोड में कार्य करना आवश्यक है। कार्यालय के सभी कम्प्यूटरों में यूनिकोड में कार्य करने की सुविधा अवश्य ही मौजूद होनी चाहिए। यदि किसी कारण से यूनिकोड डिसेबल हो गया है तो उसे इनेबल करना भी स्वयं ही आना चाहिए। हिंदी के विभिन्न टूल्स का प्रयोग करते हुए प्रत्येक व्यक्ति चाहे वह टाइपिंग जानता है या नहीं, टाइप कर सकता है। उन्होंने कार्यशाला में कर्मचारियों को इन टूल्स की जानकारी भी दी। इसके साथ ही प्रभावशाली नोटिंग–ड्राफ्टिंग करने के लिए पारिभाषिक शब्दावली के उपयोग के बारे में भी कर्मचारियों का मार्गदर्शन किया तथा इसका अभ्यास भी कराया। कार्यशाला में 31 कर्मचारियों ने प्रतिभागिता की।

द्वितीय कार्यशाला

नराकास हरिद्वार के तत्वावधान में अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान, ऋषिकेश के सौजन्य से 09 दिसंबर 2022 को ऋषिकेश एवं पर्वतीय क्षेत्रों में स्थित सदस्य संस्थानों के लिए हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस कार्यशाला में बीएचईएल के पूर्व समन्वयकर्ता अधिकारी एवं अनेक राष्ट्रीय स्तर के मंचों के संचालक डॉ नरेश मोहन एवं पंजाब नेशनल बैंक, क्षेत्रीय कार्यालय, देहरादून की वरि. प्रबंधक (राजभाषा) एवं सचिव, नराकास बैंक देहरादून, सुश्री अरुणा ज्योति ने व्याख्यान दिया। कार्यशाला में टीएचडीसी के कारपोरेट कार्यालय के 10 अधिकारियों ने भी प्रतिभागिता की। इस अवसर पर एम्स की संकायाध्यक्ष शैक्षिक, प्रो. जया चतुर्वेदी एवं नराकास के सचिव श्री पंकज कुमार शर्मा उपस्थित थे।

दीप प्रज्ज्वलित कर कार्यशाला का शुभारंभ करते अधिकारी

टिहरी यूनिट

प्रथम कार्यशाला

दीप प्रज्ज्वलित कर हिंदी कार्यशाला का उद्घाटन करते अपर महाप्रबंधक (मा.सं. एवं प्रशा.), श्री अमर नाथ त्रिपाठी एवं अन्य अधिकारी

टिहरी यूनिट में 07 सितंबर, 2022 को कार्यपालकों के लिए एक दिवसीय हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस अवसर पर कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे अपर महाप्रबंधक, मानव संसाधन एवं प्रशासन, डॉ. ए.एन. त्रिपाठी एवं मुख्य संकाय सदस्य, वरिष्ठ हिंदी अधिकारी, (सेवानिवृत्त), केएचईपी, कोटेश्वर, श्री डी.एस. रावत का स्वागत पुस्तक भेंट कर किया गया। कार्यशाला का शुभारंभ दीप प्रज्ज्वलित कर किया गया। कार्यशाला में आमंत्रित संकाय सदस्य श्री डी.एस. रावत ने उपस्थित प्रतिभागियों को राजभाषा नियम, अधिनियम एवं कार्यालयीन हिंदी का स्वरूप तथा पत्राचार के विविध रूपों पर व्याख्यान दिया। प्रबंधक (हिंदी), श्री इन्द्रराम नेगी, द्वारा कंप्यूटर एवं मोबाइल में हिंदी वाइस टाइपिंग एवं कार्यालय में मानक शब्दावली एवं तकनीकी शब्दावली के प्रयोग पर प्रस्तुतीकरण दिया। कार्यशाला में 25 अधिकारियों ने भाग लिया।

द्वितीय कार्यशाला

यूनिट कार्यालय, टिहरी में 06 दिसंबर, 2022 को अधिकारियों के लिए एक दिवसीय हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता अपर महाप्रबंधक (मा.सं. एवं प्रशा.), डॉ. ए.एन.त्रिपाठी ने की। कार्यशाला में आमंत्रित मुख्य संकाय सदस्य डॉ. संजीव नेगी, प्रोफ़ेसर राजकीय महाविद्यालय, नई टिहरी का स्वागत पुस्तक भेंट कर किया गया। कार्यशाला का शुभारंभ दीप प्रज्ज्वलित कर किया गया। कार्यशाला में डॉ. संजीव नेगी ने उपस्थित प्रतिभागियों को हिंदी भाषा का वर्तमान स्वरूप एवं भविष्य एवं कार्यालयीन हिंदी के स्वरूप एवं पत्राचार के विभिन्न रूप पर व्याख्यान दिया एवं अपने अनुभवों से प्रतिभागियों को हिंदी में कार्य करने के लिए प्रोत्साहित किया। प्रबंधक (हिंदी), श्री इन्द्रराम नेगी ने प्रतिभागियों को राजभाषा नियम एवं अधिनियम एवं कार्यालय में मानक शब्दावली एवं तकनीकी शब्दावली के प्रयोग पर व्याख्यान दिया। कार्यशाला में 22 अधिकारियों ने भाग लिया।

कार्यशाला का दृश्य

कोटेश्वर यूनिट

प्रथम कार्यशाला

कोटेश्वर यूनिट में 08 सितंबर 2022 को कर्मचारियों के लिए एक दिवसीय हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस अवसर पर कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे महाप्रबंधक (परियोजना), श्री ए.के. घिल्डियाल एवं मुख्य संकाय सदस्य,

वरिष्ठ हिंदी अधिकारी, (सेवानिवृत्त), केएचईपी, कोटेश्वर, श्री डी.एस. रावत का स्वागत पुस्तक भेंट कर किया गया। कार्यशाला का शुभारंभ दीप प्रज्ज्वलित कर किया गया।

कार्यशाला में आमंत्रित संकाय सदस्य श्री डी.एस. रावत ने उपस्थित प्रतिभागियों को राजभाषा नियम, अधिनियम, कार्यालयीन हिंदी एवं पत्राचार पर व्याख्यान दिया। प्रबंधक (हिंदी), श्री इन्द्रराम नेगी, द्वारा कंप्यूटर एवं मोबाइल में हिंदी वाइस टाइपिंग एवं कार्यालय में मानक शब्दावली के प्रयोग पर प्रस्तुतिकरण दिया। कार्यशाला में 23 कर्मचारियों ने भाग लिया।

द्वितीय कार्यशाला

यूनिट कार्यालय, कोटेश्वर में 07 दिसंबर, 2022 को अधिकारियों के लिए एक दिवसीय हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता उप महाप्रबंधक, बांध एवं पावर हॉउस, श्री विकास चौहान ने की। कार्यशाला का शुभारंभ दीप प्रज्ज्वलित कर किया गया। कार्यशाला में प्रबंधक (हिंदी), श्री इन्द्रराम नेगी ने राजभाषा नीति–नियम, कंप्यूटर व मोबाइल में हिंदी वॉइस टाइपिंग एवं कार्यालय में मानक शब्दावली के प्रयोग पर प्रस्तुतिकरण दिया। कार्यशाला में 20 अधिकारियों ने भाग लिया। कार्यक्रम का संचालन श्री आर. डी. ममगाई, उप प्रबंधक (जनसंपर्क/हिंदी) द्वारा किया गया।

कार्यशाला का दृश्य

एनसीआर कार्यालय, कौशांबी

हिंदी कार्यशाला में केंद्रीय कृषि मंत्रालय के निदेशक(राजभाषा), श्री अमित प्रकाश एवं मुख्य महाप्रबंधक (एनसीआर), श्री संदीप सिंघल तथा अन्य अधिकारी

एनसीआर कार्यालय, कौशांबी में 22 सितंबर, 2022 को हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया। हिंदी कार्यशाला में श्री अमित प्रकाश, निदेशक (राजभाषा), कृषि मंत्रालय, भारत सरकार को व्याख्यान देने के लिए आमंत्रित किया गया। इस अवसर पर श्री संदीप सिंघल, मुख्य महाप्रबंधक (प्रभारी) ने श्री अमित प्रकाश, निदेशक (राजभाषा) का स्वागत किया। कार्यशाला के शुभारंभ अवसर पर उप प्रबंधक (मा.सं.), श्री रोहित जोशी ने उपस्थित प्रतिभागियों का स्वागत किया। व्याख्यान के दौरान श्री अमित प्रकाश ने राजभाषा अधिनियम की धारा 3(3), राजभाषा नियम, 1976 एवं भारत सरकार के द्वारा राजभाषा के संबंध में किए गए अन्य प्रावधानों से सभी प्रतिभागियों का मार्गदर्शन किया। कार्यक्रम के समापन पर श्री आशुतोष कुमार आनंद, वरि प्रबंधक (मानव संसाधन) ने अधिकारियों एवं कर्मचारियों की उपस्थिति के लिए आभार व्यक्त किया। कार्यशाला में 22 अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने भाग लिया।

हिंदी पखवाड़ा का आयोजन

इस वर्ष हिंदी दिवस एवं हिंदी पखवाड़ा मनाने के संबंध में राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार के निर्देश थे कि हिंदी पखवाड़ा के आयोजन की रूपरेखा इस प्रकार बनाई जाए कि इसका शुभारंभ 14 सितंबर, 2022 को माननीय केंद्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री श्री अमित शाह की अध्यक्षता में सूरत, गुजरात में होने वाले अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन से हो और इसका समापन संबंधित कार्यालय में किया जाए।

उपर्युक्त आदेशों के अनुपालन में निगम के निदेशक(वित्त), श्री जे.बेहेरा एवं उप प्रबंधक(राजभाषा), श्री पंकज कुमार शर्मा ने 14–15 सितंबर, 2022 को सूरत, गुजरात में आयोजित हुए हिंदी दिवस समारोह एवं अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन में भाग लिया। टिहरी यूनिट से प्रबंधक(राजभाषा), श्री इन्द्रराम नेगी ने भी इस कार्यक्रम में भाग लिया। हिंदी दिवस पर माननीय केंद्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री श्री अमित शाह के कर–कमलों से राजभाषा कीर्ति पुरस्कारों का वितरण किया गया एवं 14 एवं 15 सितंबर, 2022 को अनेक विद्वानों के व्याख्यानों के सत्र आयोजित किए गए। कार्यक्रम में माननीय गृह राज्यमंत्री, श्री अजय कुमार मिश्रा एवं श्री निशिथ प्रामाणिक, माननीय संसदीय राजभाषा समिति के उपाध्यक्ष एवं संसद सदस्य (लोकसभा), श्री भर्तृहरि महताब, समिति के समस्त माननीय सदस्यगण, नगर राजभाषा कार्यान्वयन समितियों के अध्यक्षों, सचिवों एवं भारत सरकार के मंत्रालयों/संस्थानों/विभागों से लगभग साढे आठ हजार प्रतिनिधि उपस्थित हुए। इस अवसर पर राजभाषा विभाग के द्वारा राजभाषा विषयक स्मारिका का प्रकाशन किया गया जिसमें टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड के उप प्रबंधक(राजभाषा), श्री पंकज कुमार शर्मा का आलेख ''राजभाषा हिंदी स्वर्णिम पथ पर अग्रसर'' भी प्रकाशित किया गया । इस पत्रिका का विमोचन कार्यक्रम के दौरान किया गया ।

हिंदी दिवस के अवसर पर निगम के अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक, श्री आर.के.विश्नोई के द्वारा निगम में अधिकारियों व कर्मचारियों को राजभाषा हिंदी के प्रति प्रेरित व प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से अपील जारी की गई थी। जिसे माननीय गृह एवं सहकारिता मंत्री, श्री अमित शाह, माननीय केंद्रीय विद्युत, नवीन एवं नवीकरणीय ऊर्जा मंत्री, श्री आर.के.सिंह, माननीय केंद्रीय राज्यमंत्री, विद्युत एवं भारी उद्योग मंत्रालय, श्री कृष्णपाल गुर्जर की हिंदी दिवस पर जारी अपील के साथ निगम की सभी यूनिटों/कार्यालयों में परिचालित किया गया।

कारपोरेट कार्यालय, ऋषिकेश

हिंदी पखवाड़ा का समापन एवं पुरस्कार वितरण समारोह

कारपोरेट कार्यालय, ऋषिकेश में 14 सितंबर से 30 सितंबर, 2022 तक हिंदी पखवाड़ा का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम के दौरान कारपोरेट कार्यालय में 16 सितंबर से अनेक प्रतियोगिताओं व कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। पखवाड़ा का समापन एवं पुरस्कार वितरण 30 सितंबर, 2022 को कारपोरेट कार्यालय की राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक में किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री वीरेन्द्र सिंह, महाप्रबंधक (ओ.एम.एस) ने की। इस अवसर पर राजभाषा कार्यान्वयन समिति के सदस्यों ने वीडियो कांफ्रेंसिंग के माध्यम से बैठक एवं पुरस्कार वितरण समारोह में अपनी उपस्थिति दर्ज की। बैठक में सदस्य सचिव, श्री पंकज कुमार शर्मा, उप प्रबंधक (राजभाषा) ने विभागों से प्राप्त हुई हिंदी की तिमाही प्रगति रिपोर्टों की मदवार समीक्षा की।

पुरस्कार वितरण समारोह में कार्यक्रम के अध्यक्ष, श्री वीरेन्द्र सिंह, महाप्रबंधक (ओ.एम.एस), श्री ईश्वरदत्त तिग्गा, अपर महाप्रबंधक (मा.सं.एवं प्रशा.), श्री यू.बी.सिंह, अपर महाप्रबंधक (मा.सं.–नीति एवं औद्यो.अभि.), श्री नटराजन कृष्णा, अपर महाप्रबंधक (परि.–सिविल) सहित अनेक वरि. अधिकारी एवं विजेता कर्मचारी उपस्थित थे। इस अवसर पर सर्वप्रथम सभी उपस्थित अधिकारियों व कर्मचारियों के समक्ष अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक के द्वारा हिंदी दिवस के अवसर पर जारी

की गई अपील पढ़ी गई जिसमें निगम के अधिकारियों व कर्मचारियों से अपील की गई थी कि वे राजभाषा विभाग के द्वारा प्रत्येक वर्ष जारी किए जाने वाले वार्षिक कार्यक्रम में दिए गए लक्ष्यों को पूरा करने का भरसक प्रयास करें। अध्यक्ष महोदय के कर–कमलों से विजेता कर्मचारियों को पुरस्कृत किया गया।

16 सितंबर, 2022 को आयोजित हुई हिंदी निबंध प्रतियोगिता में श्री हरीशचन्द्र उपाध्याय, वरि.प्रबंधक (भूगर्भ एवं भू–तकनीकी)–प्रथम, श्री आशीष पाठक, वरि अधिकारी (मा.सं.–कल्याण)–द्वितीय, श्रीमती शीला देवी, उप अधिकारी (वाणिज्यिक)–तृतीय रहे । साथ ही श्री ऋतेश शर्मा, उप प्रबंधक (ओएमएस) एवं सुश्री काजल परमार, वरि. अधिकारी (जनसंपर्क) ने प्रोत्साहन पुरस्कार प्राप्त किया। **19 सितंबर, 2022 को आयोजित हुई नोटिंग–ड्राफ्टिंग प्रतियोगिता** में श्री विनय कुमार जैन, उप महाप्रबंधक (सर्विसेज–प्रापण)–प्रथम, श्री आनंद कुमार अग्रवाल, वरि. प्रबंधक (मा.सं.–प्रशा.) –द्वितीय, श्री सचिन मित्तल, प्रबंधक (व्यवसाय विकास)– तृतीय रहे । साथ ही सुश्री लता लाहोटी, विधि अधिकारी (विधि एवं माध्य.) एवं श्री राकेश नौटियाल, उप प्रबंधक (विधि एवं माध्य.) ने प्रोत्साहन पुरस्कार प्राप्त किया।

20 सितंबर, 2022 को आयोजित हुई अनुवाद प्रतियोगिता में श्री सुजीत कुमार पाण्डे, वरि.प्रबंधक (सर्विसेज)–प्रथम, श्री जी.एस.चौहान, वरि.प्रबंधक (सतर्कता)–द्वितीय, श्रीमती सरला डबराल, वरि.अधिकारी (औषधालय)–तृतीय रहे। श्री आनंद कुमार अग्रवाल, वरि. प्रबंधक (मा.सं.–प्रशा.) एवं श्री गंभीर गुनसोला, प्रारूपकार (परि.–सिविल) ने प्रोत्साहन पुरस्कार प्राप्त किया। **21 सितंबर, 2022 को आयोजित हुई हिंदी सुलेख प्रतियोगिता** में श्री जितेन्द्र जोशी, प्रबंधक (प्रशासन–प्रोटोकॉल), सुश्री शुभि माहेश्वरी, उप प्रबंधक (सामा.एवं पर्या.) –द्वितीय, सुश्री लता लाहोटी, विधि अधिकारी (विधि एवं माध्य.)–तृतीय रहे । श्रीमती अनामिका बुड़ाकोटी, प्रबंधक(सामा.एवं पर्या.) एवं सुश्री हिना रंक, वरि.सहायक (वित्त एवं लेखा) ने प्रोत्साहन पुरस्कार प्राप्त किया।

निबंध प्रतियोगिता में प्रतिभागिता करते अधिकारी व कर्मचारी

22 सितंबर, 2022 को कार्यपालकों के लिए आयोजित हुई हिंदी ई–मेल प्रतियोगिता में श्री एस.के.चौहान, अपर महाप्रबंधक (आरएंडडी)–प्रथम, श्री आनंद कुमार अग्रवाल, वरि. प्रबंधक(मा.सं.–प्रशासन)–द्वितीय, श्री जे.एल.भारती, वरि. अधिकारी (जनसंपर्क) – तृतीय रहे। साथ ही श्री अनमोल गुप्ता, कार्य.प्रशिक्षु (वित्त एवं लेखा) एवं सुश्री काजल परमार, वरि.अधिकारी (जनसंपर्क) ने प्रोत्साहन पुरस्कार प्राप्त किया। **22 सितंबर, 2022 को ही गैर–कार्यपालकों के लिए आयोजित हुई हिंदी ई–मेल प्रतियोगिता** में श्रीमती शीला देवी, उप अधिकारी (वाणिज्यिक)–प्रथम, श्री खुशहाल सिंह राणा, उप अधिकारी (परिकल्प–सिविल)– द्वितीय, श्री खीम सिंह बिष्ट, कनि. अधिकारी (मा.सं.–नीति)– तृतीय रहे । साथ ही श्री मोहनलाल नौटियाल, उप अधिकारी (प्रशासन) एवं श्री गंभीर गुनसोला, प्रारूपकार (परि.–सिविल) ने प्रोत्साहन पुरस्कार प्राप्त किया।

23 सितंबर, 2022 को टीएचडीसी इंडिया लि. के कारपोरेट कार्यालय एवं नराकास हरिद्वार के सदस्य संस्थानों के कर्मचारियों के लिए आयोजित हुई **राजभाषा ज्ञान/सामान्य हिंदी प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता** में श्री राजीव कुमार वर्मा, प्रबंधक–सीआईएक्स, बीएचईएल, हरिद्वार–प्रथम, श्री नीरज कुमार, लेखापरीक्षक–रक्षा लेखा, वेतन लेखा कार्यालय, रुड़की–द्वितीय, श्री राजेश कुमार, वरि.वैज्ञानिक–कार्बनिक भवन सामग्री, सीबीआरआई रुड़की–तृतीय रहे । सुश्री प्रगति सिंह, कनि.

नोटिंग–ड्राफ्टिंग प्रतियोगिता में प्रतिभागिता करते अधिकारी व कर्मचारी

सहायक, आईआईटी रुड़की एवं श्री एस.के.चौहान, अपर महाप्रबंधक(आरएंडडी), टीएचडीसी इंडिया लि. ने प्रोत्साहन पुरस्कार प्राप्त किया। **26 सितंबर, 2022 को आयोजित हुई हिंदी काव्य पाठ प्रतियोगिता** में श्रीमती अमिता रस्तोगी, अधिकारी(ओएमएस) –प्रथम, श्रीमती अनामिका बुड़ाकोटी, प्रबंधक(सामा.एवं पर्या.)–द्वितीय, श्री देवेन्द्र सिंह वर्मा, वरि.अभियंता (सर्विसेज–संचार) ने तृतीय पुरस्कार प्राप्त किया। श्री एस.के.चौहान, अपर महाप्रबंधक (आरएंडडी) एवं श्री विकास बंग, कार्य.प्रशिक्षु (वित्त एवं लेखा) ने प्रोत्साहन पुरस्कार प्राप्त किया।

2021–22 के दौरान विभागाध्यक्ष/अनुभागाध्यक्षों के द्वारा हिंदी में सर्वाधिक कामकाज पुरस्कार योजना के अंतर्गत श्री यू.बी.सिंह, अपर महाप्रबंधक (मा.सं.–नीति एवं औद्यो.अभि.)–प्रथम, डॉ विभा चौधरी, मुख्य चिकित्साधिकारी (औषधालय)–द्वितीय एवं श्री एस.के.शर्मा, उप महाप्रबंधक (मा.सं.वि.)– तृतीय रहे। हिंदी में सर्वाधिक डिक्टेशन देने वाले विभागाध्यक्षों में हिंदी भाषी श्रेणी में श्री यू.बी.सिंह, अपर महाप्रबंधक (मा.सं.–नीति एवं औद्यो.अभि.)–प्रथम एवं इसी श्रेणी में श्री वीरेन्द्र सिंह, महाप्रबंधक(ओ.एंड एम.एस.)– द्वितीय रहे। **मूल रूप से हिंदी में सर्वाधिक टिप्पण एवं आलेखन करने वाले अधिकारियों/कर्मचारियों** में श्री शिव प्रसाद व्यास, अधिकारी (मा.सं.–स्थापना) एवं श्री जे.एल. भारती, वरि.जनसंपर्क अधिकारी (केंद्रीय संचार)–प्रथम(02), श्रीमती महक शर्मा, वरि. अधिकारी (मा.सं.–स्थापना), श्री आशीष पाठक, वरि.अधिकारी (मा.सं.–कल्याण), श्री गबर सिंह बागड़ी, सहायक (ओएमएस)–द्वितीय (03) तथा सुश्री शकुंतला, वरि.सहायक (वाणिज्यिक), श्री खीम सिंह बिष्ट, कनि.अधिकारी (मा.सं.–नीति), श्री जी.एस.रावत, प्रबंधक (मा.सं.–नीति), श्री वी.डी.भट्ट, प्रबंधक (मा.सं.–प्रशासन) एवं श्री शुभम चौबे, वरि.अधिकारी(मा.सं.वि.) ने तृतीय(05) पुरस्कार प्राप्त किया।

विभागों में हिंदी का कार्यान्वयन देख रहे हिंदी नोडल अधिकारियों को भी उनके सराहनीय योगदान हेतु पुरस्कृत किया गया। इस योजनांतर्गत श्री नटराजन कृष्णा, अपर महाप्रबंधक (परिकल्प–सिविल), श्री ओ.पी.सेमवाल, उप महाप्रबंधक (परि.–विद्युत), श्री वी.पी.माथुर, वरि.प्रबंधक(वित्त–बजट), श्री ललित जोशी, प्रबंधक (कंपनी सचिवालय), श्री एस.एस. गुसाई, वरि. प्रबंधक(सर्विसेज–सिविल अनुरक्षण), श्री देवेन्द्र वर्मा, वरि.अभियंता(सर्विसेज–संचार), श्री पदम कुमार शर्मा, कनि.अधिकारी (मुख्य अभिलेख कार्यालय), श्री एच.सी.उपाध्याय, वरि. प्रबंधक (भू–विज्ञान एवं भू–तकनीकी), श्री सौरभ कुशवाहा, वरि.अधिकारी (सामा.एवं पर्यावरण), सुश्री मानसी अग्निहोत्री, विधि अधिकारी (विधि एवं माध्य.) को पुरस्कृत किया गया।

टीएचडीसी की हिंदी गृह पत्रिका ''पहल'' के वर्ष 2021–22 में प्रकाशित उत्कृष्ट लेखों के लिए श्री एस.के. चौहान, अपर महाप्रबंधक (आरएंडडी) को अंक–27 में प्रकाशित उनके लेख ''लेखक और लॉकडाउन'', श्री शिवराज चौहान, उप महाप्रबंधक(पीएसपी, टिहरी) को अंक–28 एवं 29 में प्रकाशित उनके लेख ''विद्युत वाहन–भविष्य का वाहन, पर्यावरण मित्र वाहन भाग–1 व भाग–2 के लिए, श्रीमती अनामिका बुड़ाकोटी, प्रबंधक (सामा.एवं पर्या.) को अंक–28 में प्रकाशित उनके लेख ''सड़कों की रूपरेखा'', श्री आर.पी.रतूड़ी, वरि.प्रबंधक, एमपीएस को अंक–28 में प्रकाशित उनके लेख ''डॉक्टर । यू केन डू इट'' तथा श्री आल्हा सिंह, अपर महाप्रबंधक, द्वारका को अंक–29 में प्रकाशित उनके लेख ''सिंगरौली–ऊर्जाधानी'' के लिए पुरस्कृत किया गया ।

हिंदी में सर्वाधिक कार्य करने वाले मानव संसाधन विकास विभाग को 2021–22 के लिए अंतर विभागीय चल राजभाषा ट्राफी प्रदान की गई तथा वित्त–बजट को उत्तरोत्तर प्रगतिगामी चल राजभाषा ट्रॉफी प्रदान की गई।

चल राजभाषा ट्राफी प्राप्त करते मा.सं.वि. विभाग के अधिकारी

हिंदी पखवाड़ा के समापन अवसर पर महाप्रबंधक (ओएमएस), श्री वीरेन्द्र सिंह ने अपने संबोधन में हिंदी पखवाड़ा के दौरान आयोजित हुई प्रतियोगिताओं के पुरस्कार विजेताओं एवं प्रोत्साहन

योजनाओं के अंतर्गत विजेता रहे अधिकारियों एवं कर्मचारियों को बधाई दी । उन्होंने कहा कि पहले जब टाइपराइटर पर कार्य होता था तो कोई अधिकारी अपना नाम भी टाइप नहीं कर सकता है परन्तु अब वह स्थिति नहीं रही है। हिंदी ई–मेल प्रतियोगिता में 28 अधिकारियों ने भाग लिया है और आज पुरस्कार भी प्राप्त किए हैं। इसलिए जो भी छोटी–मोटी समस्याएं आ रही थी वे धीरे–धीरे अब समाप्त होती जा रही हैं। उन्होंने सभी कर्मचारियों से निगम में राजभाषा हिंदी को पूर्ण स्थापित करने के लिए निरंतर प्रयासरत रहने का अनुरोध किया।

यूनिट कार्यालय, टिहरी

निगम की टिहरी यूनिट में 14 से 29 सितंबर, 2022 तक हिंदी पखवाड़ा मनाया गया। हिंदी पखवाड़ा के उद्घाटन समारोह कार्यक्रम का शुभारंभ कार्यपालक निदेशक (टीसी), श्री यू.के.सक्सेना, महाप्रबंधक (यांत्रिक), श्री एम.के.सिंह, महाप्रबंधक (स्टेज–1) श्री अजय वर्मा, महाप्रबंधक (नियोजन), श्री अभिषेक गौड़, अपर महाप्रबंधक, मा.सं.एवं प्रशा., डॉ.ए.एन. त्रिपाठी, मुख्य चिकित्साधिकारी, डॉ. नमिता डिमरी एवं अन्य अधिकारियों द्वारा दीप प्रज्ज्वलित कर किया गया। कार्यक्रम का संचालन कर रही कनिष्ठ अधिकारी (हिंदी), श्रीमती नीरज सिंह द्वारा मुख्य अतिथि एवं सभी उपस्थित अधिकारियों/कर्मचारियों का स्वागत करते हुए पखवाड़ा के आयोजन पर प्रकाश डालते हुए इस दौरान आयोजित किए जाने वाले कार्यक्रमों एवं गतिविधियों की जानकारी दी गई ।

दीप प्रज्ज्वलित कर हिंदी पखवाड़ा का उद्घाटन करते कार्यपालक निदेशक, श्री यू.के.सक्सेना एवं वरि.अधिकारीगण

इस अवसर पर कार्यपालक निदेशक (टीसी), श्री यू.के. सक्सेना ने माननीय गृह एवं सहकारिता मंत्री, भारत सरकार, श्री अमित शाह, विद्युत, नवीन एवं नवीकरणीय ऊर्जा मंत्री, भारत सरकार, श्री आर.के. सिंह एवं अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक, टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड, श्री राजीव विश्नोई की हिंदी दिवस के अवसर पर जारी की गई अपील पढ़कर सुनाई एवं सभी उपस्थित अधिकारियों/ कर्मचारियों को संबोधित करते हुए कहा कि हिंदी पखवाड़ा के आयोजन का उद्देश्य सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों में हिंदी में कार्य करने की आदत डालना है। अतः इन प्रतियोगिताओं में अधिकारियों एवं कर्मचारियों को अधिक से अधिक भाग लेना चाहिए।

पखवाड़ा का समापन समारोह 29 सितंबर, 2022 को महाप्रबंधक (ओएंडएम), श्री आर.आर. सेमवाल की अध्यक्षता में किया गया एवं विजेता प्रतिभागियों को महाप्रबंधक (ओएंडएम), श्री आर.आर. सेमवाल, महाप्रबंधक (यांत्रिक), श्री एम. के. सिंह, महाप्रबंधक (स्टेज–1) श्री अजय वर्मा एवं महाप्रबंधक (नियोजन), श्री अभिषेक गौड़ द्वारा पुरस्कार प्रदान किए गए।

हिंदी सुलेख प्रतियोगिता में श्री डी.सी.भट्ट–प्रथम, श्री अतुल कुमार–द्वितीय, कु. कनिका चौहान–तृतीय एवं श्री दीपक उनियाल ने सांत्वना पुरस्कार प्राप्त किया। **हिंदी निबंध प्रतियोगिता** में श्रीमती ममता गौड़– प्रथम, श्री सौरभ द्विवेदी – द्वितीय, श्री नरेंद्र कुमार जांगिड– तृतीय एवं श्री दौलत सिंह नेगी ने सांत्वना पुरस्कार प्राप्त किया। **हिंदी टंकण प्रतियोगिता** में श्री विजय कुमार –प्रथम, श्री दौलत सिंह नेगी – द्वितीय, श्रीमती मंजू तिवाड़ी–तृतीय एवं श्रीमती गीता विज ने सांत्वना पुरस्कार प्राप्त किया।

टिप्पण एवं आलेखन प्रतियोगिता में श्री सौरभ द्विवेदी – प्रथम, श्री जे.पी. बिजल्वान – द्वितीय, श्री नरेंद्र कुमार जांगिड – तृतीय एवं श्री नन्द कुमार नौटियाल ने सांत्वना पुरस्कार प्राप्त किया। **अनुवाद प्रतियोगिता** में श्री आदित्य मिश्र –प्रथम, श्री विजय प्रकाश भट्ट – द्वितीय, श्री नरेंद्र कुमार जांगिड – तृतीय एवं श्री नन्द कुमार नौटियाल ने

सांत्वना पुरस्कार प्राप्त किया। **वाद–विवाद प्रतियोगिता** में श्री सौरभ द्विवेदी – प्रथम, श्री वी.पी.एस. रावत – द्वितीय, श्री शशांक लाल – तृतीय एवं श्री दिलीप कुमार द्विवेदी ने सांत्वना पुरस्कार प्राप्त किया। इस दौरान **प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता** का आयोजन भी किया गया, जिसमें विजेता प्रतिभागियों को उसी समय प्रश्न के सही उत्तर देने पर नकद पुरस्कार प्रदान किया गया।

चल राजभाषा शील्ड प्राप्त करते विद्युत विभाग के अधिकारीगण

राजभाषा हिंदी में मूलरूप से सर्वाधिक कार्य करने वाले 10 कर्मचारियों को भी पुरस्कार प्रदान किए गए, जिसमें श्री दीपक उनियाल एवं श्री डी.सी. भट्ट– प्रथम – श्री विजय प्रकाश भट्ट, श्री विजय कुमार एवं श्री रंजीत सिंह ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया। वर्ष 2021–22 के दौरान राजभाषा हिंदी में उत्कृष्ट कार्य करने के लिए राजभाषा चल वैजयंती ट्राफी – 2021–22 प्रदान की गई, जिसमें प्रथम ट्राफी विद्युत विभाग एवं द्वितीय सुरक्षा विभाग को प्रदान की गई। इस अवसर पर श्री इन्द्र राम नेगी, प्रबंधक (हिंदी) ने राजभाषा कार्यान्वयन समिति के अध्यक्ष एवं सदस्यों को दूसरी तिमाही के दौरान हिंदी काम–काज की प्रगति से अवगत कराया।

इस अवसर पर उपस्थित वरिष्ठ अधिकारियों में श्री दीपक कुमार, अपर महाप्रबंधक, श्री दिनेश भट्ट, उप महाप्रबंधक, श्री प्रदीप गोयल, उप महाप्रबंधक, श्री एम. एल. खांगर, उप महाप्रबंधक, श्री कृष्ण कुमार, वरिष्ठ प्रबंधक, श्री दिलीप कुमार द्विवेदी, वरिष्ठ प्रबंधक, मानव संसाधन एवं प्रशासन के साथ–साथ हिंदी नोडल अधिकारी एवं अनुभाग अधिकारी भी उपस्थित थे। पखवाडा समारोह को सफल बनाने हेतु श्री आर.डी. ममगाई, उप प्रबंधक (जन–संपर्क) ने आभार व्यक्त किया।

एनसीआर कार्यालय, कौशांबी

एनसीआर कार्यालय कौशांबी में 14 से 28 सितंबर, 2022 तक हिंदी पखवाड़ा का आयोजन किया गया । पखवाड़ा का उद्घाटन एवं शुभारंभ श्री संदीप सिंघल, मुख्य महाप्रबंधक (प्रभारी) के द्वारा दीप प्रज्ज्वलित कर किया गया। श्री सिंघल ने हिंदी दिवस एवं हिदी पखवाड़ा के शुभ अवसर पर समस्त अधिकारियों एवं कर्मचारियों को हिंदी में ज्यादा से ज्यादा कार्य करने के लिए प्रेरित किया तथा उन्होंने समस्त अधिकारियों एवं कर्मचारियों से हिंदी पखवाड़ा के दौरान आयोजित प्रतियोगिताओं में बढ़–चढ़ कर प्रतिभागिता करने की अपील की। 14 सितंबर को हिंदी दिवस पर अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक के द्वारा जारी की गई अपील सभी कर्मचारियों को सुनाई गई । पखवाड़ा के दौरान 15 सितंबर को हिंदी निबंध प्रतियोगिता, 16 सितंबर को नोटिंग–ड्राफ्टिंग प्रतियोगिता, 20 सितंबर को अनुवाद प्रतियोगिता एवं 22 सितंबर को वाद–विवाद प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।

हिंदी पखवाड़ा के शुभारंभ अवसर पर उपस्थित मुख्य महाप्रबंधक, श्री संदीप सिंघल एवं वरिष्ठ अधिकारीगण

हिंदी पखवाड़ा का समापन एवं पुरस्कार वितरण समारोह 28 सितंबर, 2022 को किया गया जिसमें प्रतियोगिताओं में विजयी प्रतिभागियों को कारपोरट कार्यालय से प्राप्त दिशा–निर्देशों के अनुसार पुरस्कृत किया गया। इस अवसर पर मुख्य महाप्रबंधक (प्रभारी) ने पखवाड़ा के दौरान आयोजित प्रतियोगिताओं में अधिकारियों एवं कर्मचारियों के द्वारा बढ़–चढ़ कर भाग लेने के लिए आभार व्यक्त किया तथा भविष्य में प्रतिभागियों की संख्या बढ़ाने के लिए प्रेरित किया

। उन्होंने कहा कि भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग द्वारा जारी वार्षिक कार्यक्रम 2022–23 के अनुपालन में एनसीआर कार्यालय, कौशांबी में हिंदी पत्राचार शत–प्रतिशत होना चाहिए क्योंकि एनसीआर कार्यालय, कौशाम्बी 'क' क्षेत्र में स्थित है।

खुर्जा एसटीपीपी

श्री कुमार शरद, मुख्य महाप्रबंधक(परि.) से चल राजभाषा शील्ड प्राप्त करते मानव संसाधन एवं प्रशासन विभाग के अधिकारीगण

भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग के निर्देशानुसार टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड, खुर्जा परियोजना में दिनांक 14 से 29 सितंबर, 2022 तक हिंदी पखवाड़ा का आयोजन किया गया । हिंदी पखवाड़ा समापन कार्यक्रम का शुभारंभ करते हुए सर्वप्रथम श्री कुमार शरद मुख्य महाप्रबंधक (परियोजना) ने अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक की अपील को समारोह में उपस्थित अधिकारी/कर्मचारियों के समक्ष पढ़कर सुनाया। तत्पश्चात मुख्य महाप्रबंधक (परियोजना) ने हिंदी के प्रचार–प्रसार पर बल देते हुए सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों को सरकारी काम–काज में हिंदी का अधिक से अधिक प्रयोग करने के लिए निर्देशित किया। हिंदी पखवाड़ा के दौरान परियोजना के समस्त कार्मिकों हेतु निबंध, नोटिंग–ड्राफ्टिंग, अनुवाद, वाद–विवाद, काव्य–पाठ, हिंदी टंकण, हिंदी प्रश्नोत्तरी एवं अन्ताक्षरी प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया।

पुरस्कार वितरण समारोह में मुख्य महाप्रबंधक (परियोजना) ने प्रतियोगिताओं में 45 विजेता प्रतिभागियों को प्रथम, द्वितीय, तृतीय एवं दो सांत्वना पुरस्कार प्रदान किए । इसके अतिरिक्त वर्ष 2021–22 के दौरान हिंदी में सर्वाधिक काम–काज करने वाले विभाग मानव संसाधन एवं प्रशासन को ट्रॉफी प्रदान की गई। मूलरूप से हिंदी में सर्वाधिक टिप्पण/आलेखन करने वाले अधिकारियों व कर्मचारियों को 10 पुरस्कार प्रदान किए गए। विभागाध्यक्षों को हिंदी में उत्कृष्ट कार्य करने हेतु प्रथम, द्वितीय व तृतीय पुरस्कार प्रदान किए गए एवं हिंदी में सर्वाधिक डिक्टेशन देने वाले प्रथम, द्वितीय (हिंदी भाषी क्षेत्र–02) एवं प्रथम स्थान (हिंदीतर भाषी क्षेत्र–01) कार्यपालकों को भी पुरस्कृत किया गया । श्री ए.के. विश्वकर्मा, वरि. प्रबंधक (मानव संसाधन एवं प्रशासन) ने राजभाषा हिंदी के प्रचार–प्रसार को बढ़ावा देने और सरकारी काम–काज में हिंदी का अधिक से अधिक प्रयोग करने के लिए राजभाषा कार्यान्वयन समिति के सदस्यों एवं हिंदी नोडल अधिकारियों को कार्यालयों में हिंदी गतिविधियों में गतिशीलता लाने के लिए प्रेरित किया। अंत में हिंदी पखवाड़ा के समापन की घोषणा करते हुए श्री यशवंत सिंह नेगी, कनि. अधिकारी (हिंदी) ने अपनी स्वरचित कविता "हिंदी का स्वरूप" का पठन किया और कार्यक्रम में उपस्थित अधिकारियों/कर्मचारियों तथा सभी प्रतिभागियों को पखवाड़ा सफल बनाने में सहयोग प्रदान करने हेतु धन्यवाद प्रेषित किया।

अन्य यूनिट/कार्यालय

टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड की अन्य यूनिट/कार्यालयों में कार्यरत मानवशक्ति की संख्या के अनुरूप हिंदी दिवस/हिंदी सप्ताह/हिंदी पखवाड़ा का आयोजन उत्साहपूर्वक किया गया। 14 सितंबर को हिंदी दिवस के अवसर पर निगम के अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक, श्री राजीव विश्नोई की अपील पढ़ी गई जिसमें निगम के कर्मचारियों को हिंदी में कार्य करने के लिए प्रेरित किया गया था । आयोजन के दौरान कार्यालयों में विभिन्न प्रतियोगिताओं एवं कार्यक्रमों का आयोजन किया गया जिनमें निगम के अधिकारियों ने बढ़–चढ़ कर भाग लिया ।

टीएचडीसी लेडीज वेलफेयर एसोसिएशन ने भी मनाया हिंदी दिवस

पुरस्कार वितरण का दृश्य

टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड, ऋषिकेश में टीएचडीसी लेडीज वेलफेयर एसोसिएशन ने 14 सितंबर, 2022 को गत वर्षों की भांति इस वर्ष भी हिंदी दिवस मनाया। इस अवसर पर आफिसर्स क्लब में हिंदी प्रश्नोत्तरी एवं काव्यपाठ प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में एसोसिएशन की मुख्य संरक्षिका, श्रीमती चंचल विश्नोई और श्रीमती संगारिका बेहरा ने प्रतिभागी सदस्याओं को पुरस्कृत किया।

हिंदी संगोष्ठी का आयोजन

विद्युत मंत्रालय की हिंदी सलाहकार समिति के सदस्य, श्री जी.के. फरलिया संगोष्ठी में उपस्थित अधिकारियों को संबोधित करते हुए

कारपोरेट कार्यालय ऋषिकेश में 08 जुलाई, 2022 को हिंदी संगोष्ठी का आयोजन किया गया। संगोष्ठी का आयोजन विद्युत मंत्रालय की हिंदी सलाहकार समिति के वरि. सदस्य श्री जी.के.फरलिया की गरिमामयी उपस्थिति में किया गया। इस अवसर पर श्री ईश्वरदत्त तिग्गा, अपर महाप्रबंधक (मा.सं. एवं प्रशा.) ने पुष्पगुच्छ एवं शॉल से श्री फरलिया का स्वागत किया। कार्यक्रम में हिंदी नोडल अधिकारियों के साथ श्री फरलिया ने ''सरकारी कार्यालयों में राजभाषा हिंदी का प्रयोग कितना आवश्यक'' विषय पर विचार–विमर्श किया तथा टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड में राजभाषा कार्यान्वयन की स्थिति पर भी चर्चा की। श्री फरलिया ने अवगत कराया कि हिंदी सलाहकार समिति की 12 मई, 2022 को संपन्न हुई बैठक में विद्युत मंत्रालय के अधीनस्थ कार्यालयों में राजभाषा कार्यान्वयन की स्थिति की समीक्षा में पाया गया है कि कार्यालयों में हिंदी पत्राचार व टिप्पणी लेखन का प्रतिशत काफी लोचदार है जिसे कि उत्तरोत्तर रूप से बढ़ना चाहिए।

तिमाही प्रतियोगिताओं का आयोजन

राजभाषा हिंदी एवं सामान्य ज्ञान प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता : नराकास हरिद्वार के तत्वावधान में सैंट्रल बैंक ऑफ इंडिया के सौजन्य से समिति के सदस्य संस्थानों के कर्मचारियों के लिए 22 नवंबर, 2022 को राजभाषा हिंदी एवं सामान्य ज्ञान प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता का ऑनलाइन आयोजन किया गया। प्रतियोगिता में सदस्य संस्थानों के 90 कर्मचारियों ने प्रतिभागिता की जिसमें टीएचडीसी इंडिया लि. के कारपोरेट कार्यालय के कर्मचारियों ने बढ़–चढ़ कर प्रतिभागिता की ।

वाद–विवाद प्रतियोगिता : टिहरी यूनिट में 18 नवंबर, 2022 को वाद–विवाद प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इस प्रतियोगिता में उप महाप्रबंधक (विद्युत), श्री डी. सी. भट्ट एवं उप महाप्रबंधक(सुरक्षा), श्री एम.एल. खांगर ने निर्णायक मंडल की भूमिका निभाई। इस अवसर पर प्रतियोगिता के विजेता प्रतिभागियों को अपर महाप्रबंधक (मा.सं. एवं प्रशा.), डॉ. ए.एन. त्रिपाठी द्वारा पुरस्कार प्रदान किए गए।

भाषण प्रतियोगिता : कोटेश्वर यूनिट में 16 नवंबर, 2022 को भाषण प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। यह प्रतियोगिता निर्णायक मंडल के सदस्यों अपर महाप्रबंधक, चिकित्सालय, डॉ. नवनीत किरन एवं उप महाप्रबंधक, ओ. एंड एम, श्री बी.एस. पुंडीर के उपस्थिति में आयोजित की गई। इस अवसर पर प्रतियोगिता के विजेता प्रतिभागियों को मुख्य अतिथि उप महाप्रबंधक (बांध एवं पावर हॉउस), श्री विकास चौहान द्वारा पुरस्कार प्रदान किए गए।

कवि सम्मेलन का आयोजन

कारपोरेट कार्यालय, ऋषिकेश

अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक, श्री राजीव विश्नोई, निदेशक(वित्त), श्री जे.बेहेरा एवं मुख्य महाप्रबंधक (मा.सं. एवं प्रशा.), श्री वीर सिंह के साथ कविगणों का ग्रुप फोटोग्राफ

कारपोरेट कार्यालय में 12 जुलाई, 2022 से 15 अगस्त, 2022 तक आजादी का अमृत महोत्सव मनाने के क्रम में 04 अगस्त, 2022 को कवि सम्मेलन का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का उद्घाटन श्री राजीव विश्नोई, अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक, श्री जे.बेहेरा, निदेशक(वित्त), श्री वीर सिंह, मुख्य महाप्रबंधक(मा.सं. एवं प्रशा.) ने दीप प्रज्ज्वलित कर किया जिसमें कविगणों की ओर से सुश्री कविता तिवारी एवं श्री अनिल अग्रवंशी ने योगदान दिया। कार्यक्रम का संचालन कर रहे श्री पंकज कुमार शर्मा, उप प्रबंधक (राजभाषा) ने कविगणों का परिचय कराते हुए उन्हें मंच पर आमंत्रित किया । इस अवसर पर कविगणों का स्वागत शॉल एवं पुष्पगुच्छ भेंट कर किया गया । कवि सम्मेलन का मंच संचालन मध्य प्रदेश से आए कवि श्री राधाकांत पांडेय ने किया । कार्यक्रम के शुभारंभ पर लखनऊ से आई कवयित्री सुश्री कविता तिवारी ने अपने अलग अंदाज में सरस्वती वंदना करते हुए विद्या और बुद्धि की प्रदाता देवी मां सरस्वती का आह्वान किया।

कवि सम्मेलन में देश के विभिन्न भागों से कवियों को आमंत्रित किया गया था। सर्वप्रथम मुंबई से आए श्री रोहित शर्मा ने अपने हास्य रस से लबरेज काव्य पाठ से श्रोताओं को गुदगुदाते हुए कवि सम्मेलन की खूबसूरत शुरूआत की । फरीदाबाद से आए कवि उपेन्द्र पांडेय ने अपनी ओजपूर्ण रचनाओं से श्रोताओं की खूब तालियां बटोरी। काशीपुर से आई श्रीमती ऋचा पाठक ने श्रृंगार एवं वात्सल्य से भरपूर अपनी रचनाएं प्रस्तुत की। दिल्ली से आए कवि श्री अनिल अग्रवंशी ने हास्य व्यंग्य की प्रस्तुतियों से श्रोताओं का भरपूर मनोरंजन किया। अपनी ओजपूर्ण रचनाओं के लिए प्रसिद्ध कवयित्री सुश्री कविता तिवारी ने श्रोताओं को प्रेरित एवं प्रोत्साहित किया। कार्यक्रम में कारपोरेट कार्यालय के विभागों एवं अनुभागों के प्रमुखों के साथ–साथ बड़ी संख्या में अधिकारी एवं कर्मचारी सपरिवार उपस्थित थे।

टिहरी यूनिट

टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड टिहरी में दिनांक 09 अगस्त, 2022 को हास्य कवि सम्मेलन का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ मुख्य अतिथि, कार्यपालक निदेशक (टीसी), श्री यू.के. सक्सेना, कार्यपालक निदेशक (पीएसपी), श्री एल.पी.जोशी, महाप्रबंधक (परियोजना), कोटेश्वर, श्री ए.के. घिल्डियाल एवं कविगणों के द्वारा दीप प्रज्ज्वलित कर किया गया । कवि सम्मेलन में देश के विख्यात कवि श्री दीपक गुप्ता (हास्य रस), महेंद्र अजनबी (हास्य रस), योगेन्द्र शर्मा (हास्य

कार्यपालक निदेशक(टीसी), श्री यू.के.सक्सेना, कार्यपालक निदेशक (पीएसपी), श्री एल.पी.जोशी एवं अन्य प्रमुख अधिकारियों के साथ कविगणों का ग्रुप फोटोग्राफ

रस), सुश्री गौरी मिश्रा (श्रृंगार रस), श्री हरमेन्द्र पाल (हास्य रस) आमंत्रित थे।

सर्वप्रथम श्री दीपक गुप्ता, संचालनकर्ता ने सभी कवियों का परिचय कराया एवं कवि सम्मेलन की शुरुआत आजादी के अमृत महोत्सव के उपलक्ष्य में शहीदों को नमन करते हुए की गई – ''हमें भी फ़क्र होता है, कफ़न भी नाज करता है, वतन पर जां निसारी जब कोई जांबाज करता है, गजब का हौसला अद्भुत चमक आँखों में होती है, परिंदा जब कोई पहली दफा परवाज करता है''। नैनीताल से आई सुश्री गौरी मिश्रा द्वारा सरस्वती वंदना का गायन किया गया–"शब्द को संवार दे, अर्थ को निखार दे, पंक्तियों को प्यार दे, आज माँ सरस्वती"। गौरी मिश्रा ने सेना के जवानों की हौसला अफजाई पर गीतों की सुंदर प्रस्तुति दी। कवि हरमिंदर पाल ने अपनी प्रस्तुति में कहा कि "लेखनी की धार अब करे तेज वार, सच ही लिखने से ना घबराऊँ, माँ चाहे कैसी हो, लाचारी हो कोई भी अहंकारी"। कवि महेंद्र अजनबी ने– भारतीय रेल की गति यानि समय की दुर्गति आदि से श्रोताओं का भरपूर मनोरंजन किया। वीर रस के जाने–माने कवि श्री योगेन्द्र शर्मा ने वीर रस से ओत–प्रोत अपनी कविताएं प्रस्तुत की।

कवि सम्मेलन में कवियों ने आजादी के अमृत महोत्सव के उपलक्ष्य में स्वतंत्रता को याद करते हुए उन्हें नमन एवं सम्मान देने का आह्वान किया। कार्यक्रम में कवियों द्वारा श्रोताओं का भरपूर मनोरंजन करते हुए समाज में व्याप्त बुराइयों पर तंज कसे । कार्यक्रम का संचालन कवि श्री दीपक गुप्ता एवं श्री मनबीर नेगी द्वारा किया गया। इस अवसर पर अनेक वरि. अधिकारी एवं कर्मचारी उपस्थित थे।

खुर्जा एसटीपीपी

मुख्य महाप्रबंधक (परि.), श्री कुमार शरद एवं कविगण दीप प्रज्ज्वलित कर कवि सम्मेलन का उद्घाटन करते हुए

खुर्जा उच्च ताप विद्युत परियोजना परिसर में राजभाषा हिंदी के प्रचार–प्रसार को गतिशीलता प्रदान करते हुए 31 अगस्त, 2022 की पूर्व संध्या पर कवि सम्मेलन का आयोजन किया गया । कवि सम्मेलन में श्री कुमार शरद, मुख्य महाप्रबंधक (केएसटीपीपी–परियोजना) एवं श्रीमती विनीता शरद ने वरिष्ठ कवयित्री डा. अनामिका जैन 'अंबर', कवि श्री सौरभ जैन 'सुमन', श्री विनोद पॉल, श्री प्रियांशु तिवारी एवं श्री नितीश राजपूत को पुष्पगुच्छ व शाल भेंट करके सम्मानित किया। सम्मेलन का शुभारंभ दीप प्रज्ज्वलन के साथ हुआ। कार्यक्रम में वरिष्ठ कवयित्री डा. अनामिका जैन 'अंबर' ने अपनी बहुचर्चित एवं मार्मिक कविता 'दिवाली पर क्यों नहीं आये पापा अबकी बार' ने दर्शकों को भाव–विभोर किया। कवि श्री सौरभ जैन 'सुमन' की वीर रस से ओत–प्रोत राष्ट्रभक्ति की कविता ने दर्शकों के हृदय में जोश भर दिया। इसके अतिरिक्त हास्य कवि श्री विनोद पॉल एवं श्री नितीश राजपूत ने भी अपनी हास्य एवं व्यंग्यात्मक कविताओं से दर्शकों का खूब मनोरंजन किया। मुख्य महाप्रबंधक (परियोजना) ने सभी कवियों की रचनाओं की सराहना करते हुए आभार व्यक्त किया। अंत में श्री अमरेन्द्र विश्वकर्मा, वरिष्ठ प्रबंधक (मानव संसाधन एवं प्रशासन) ने आमंत्रित सभी कविगणों का धन्यवाद एवं आभार व्यक्त किया। निश्चित रूप से यह कहना सार्थक होगा कि इस प्रकार के हिंदी कार्यक्रमों के आयोजन से अधिकारियों एवं कर्मचारियों में राजभाषा हिंदी के प्रति स्नेह की भावना बढ़ती है तथा हिंदी के प्रचार–प्रसार की दिशा को गतिशीलता मिलती है।

नराकास, हरिद्वार की 34वीं अर्धवार्षिक बैठक का आयोजन

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, हरिद्वार की 34वीं अर्धवार्षिक बैठक का आयोजन 26 अगस्त, 2022 को टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड के रसमंजरी मनोरंजन सदन में किया गया। बैठक में केंद्र सरकार के 33 संस्थानों के प्रमुख एवं प्रतिनिधियों के साथ 76 अधिकारियों व कर्मचारियों ने भाग लिया। बैठक की अध्यक्षता समिति के अध्यक्ष श्री जे.बेहेरा ने की। इस अवसर पर विशिष्ट अतिथि, भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान के निदेशक, श्री अजीत कुमार चतुर्वेदी, एनआईएच के निदेशक, श्री सुधीर कुमार, बीएचईएल, हरिद्वार के कार्यपालक निदेशक, श्री पी.सी.झा तथा टीएचडीसी के मुख्य महाप्रबंधक (मा.सं. एवं प्रशा.) श्री वीर सिंह ने मंच की शोभा बढाई। कार्यक्रम का शुरूआती संचालन सुश्री काजल परमार, वरि.जनसंपर्क अधिकारी ने किया।

कार्यक्रम में सर्वप्रथम अध्यक्ष महोदय एवं सभी विशिष्ट अतिथियों का स्वागत ग्रीन प्लांट भेंट कर किया गया। सभी प्रमुख अतिथिगणों ने दीप प्रज्जवलित किया और वंदेमातरम राष्ट्रगीत के साथ कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ। कार्यक्रम के शुभारंभ के अवसर पर रिपोर्टों की समीक्षा से पूर्व छमाही के दौरान आयोजित हुई प्रतियोगिताओं के विजेताओं को प्रशस्ति पत्र से सम्मानित किया गया। साथ ही इस अवसर पर ज्ञान प्रकाश पत्रिका के वर्ष 2022 में प्रकाशित हुए 10वें अंक का विमोचन भी किया गया।

समिति के सचिव, श्री पंकज कुमार शर्मा ने अध्यक्ष महोदय की अनुमति से बैठक की कार्यवाही प्रारंभ की। उन्होंने प्रस्तुतीकरण के माध्यम से नराकास, हरिद्वार द्वारा संचालित की गई विभिन्न पहलों के बारे में जानकारी देते हुए पिछली बैठक में लिए गए निर्णयों एवं कार्यलक्ष्यों पर की गई अनुवर्ती कार्रवाई के बारे में अवगत कराया तथा सदस्य कार्यालयों की हिंदी प्रगति की अर्धवार्षिक रिपोर्ट के आंकड़ों की समीक्षा की। साथ ही उन्होंने सदस्य संस्थानों से अपेक्षाएं, सदस्य कार्यालयों के द्वारा सक्रियता से नराकास के तत्वावधान में आयोजित कार्यक्रमों/कार्यशालाओं, प्रतियोगिताओं/बैठकों में भाग लेने, नराकास की भावी कार्य योजनाओं, राजभाषा विभाग द्वारा जारी किए गए आदेशों एवं दिशा–निर्देशों के बारे में जानकारी दी।

समिति के अध्यक्ष, श्री जे. बेहेरा, आईआईटी के निदेशक, श्री अजीत कुमार चतुर्वेदी, एनआईएच के निदेशक, श्री सुधीर कुमार, बीएचईएल, हरिद्वार के कार्यपालक निदेशक, श्री पी.सी.झा तथा टीएचडीसी के मुख्य महाप्रबंधक (मा.सं. एवं प्रशा.) श्री वीर सिंह दीप प्रज्ज्वलित कर बैठक का उद्घाटन करते हुए

समिति के अध्यक्ष, श्री जे. बेहेरा ने अपने संबोधन में कहा कि विगत दो वर्षों में कोरोना महामारी के कारण व्याप्त हुई मायूसी से बाहर आने के लिए भारत सरकार विभिन्न रूपों में कार्यक्रम व गतिविधियां आयोजित कर रही है। आजादी का अमृत महोत्सव मनाया जाना इसी कड़ी में एक और पहल है इसलिए सभी संस्थान समिति की बैठकों में भी जोश एवं उत्साह से भाग लें और राजभाषा कार्यान्वयन में अपना योगदान दें। उन्होंने सभी सदस्य संस्थानों से अपील की कि वे अपने संस्थान के राजभाषा अधिकारियों को राजभाषा विभाग द्वारा 14 से 15 सितंबर, 2022 को सूरत में आयोजित किए जाने वाले हिंदी दिवस और द्वितीय अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन में अवश्य ही भेजें तथा सितंबर माह में हिंदी पखवाडा का आयोजन अपने संस्थान में उत्साह के साथ करते हुए हर्षोल्लास का वातावरण सृजित करें। उन्होंने समीक्षाधीन छमाही के दौरान नराकास के तत्वावधान में आयोजित किये जाने वाले कार्यक्रमों एवं गतिविधियों का जिम्मेदारी से निर्वहन करने वाले संस्थानों को अपनी शुभकामनाएं संप्रेषित की। उन्होंने प्रतियोगिताओं के विजेताओं को भी बधाई दी तथा भविष्य में बढ़–चढ़ कर प्रतिभागिता करने का अनुरोध किया।

नराकास, टिहरी की 24वीं अर्धवार्षिक बैठक का आयोजन

समिति के अध्यक्ष, श्री यू.के.सक्सेना एवं अपर महाप्रबंधक (मा.सं. एवं प्रशा.), श्री अमरनाथ त्रिपाठी एवं अन्य अधिकारियों का ग्रुप फोटोग्राफ

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, टिहरी की 24वीं अर्धवार्षिक बैठक 16 दिसंबर, 2022 को श्री यू.के. सक्सेना, कार्यपालक निदेशक (टीसी), टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड की अध्यक्षता में सभागार, अतिथिगृह, भागीरथीपुरम, टिहरी में आयोजित की गई । इस अवसर पर श्री ए.के घिल्डियाल, महाप्रबंधक, परियोजना (कोटेश्वर), श्री सी.पी. सिंह, महाप्रबंधक, नई परियोजना, नई टिहरी, डॉ. ए.एन.त्रिपाठी, अपर महाप्रबंधक (मानव संसाधन एवं प्रशासन) उपस्थित थे। बैठक का शुभारंभ दीप प्रज्ज्वलित कर किया गया। बैठक में नराकास के अंतर्गत आने वाले केंद्रीय सरकार के विभिन्न कार्यालयों, बैंको एवं सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों/स्वायत्त निकायों के 20 प्रमुख/प्रतिनिधि उपस्थित हुए।

बैठक की कार्यवाही आगे बढ़ाते हुए सचिव, नराकास ने प्रस्तुतीकरण के माध्यम से समीक्षा रिपोर्ट प्रस्तुत की। उन्होंने समीक्षा के दौरान राजभाषा अधिनियम की धारा 3(3), राजभाषा नियम–5, हिंदी पत्राचार एवं टिप्पणी, हिंदी टंकण एवं आशुलिपि प्रशिक्षण एवं कम्प्यूटर में यूनिकोड प्रणाली आदि पर विस्तार से चर्चा की तथा रिपोर्ट में पाई गई खामियों से अवगत कराते हुए उन्हें भविष्य में दूर करने हेतु सलाह दी। बैठक की अध्यक्षता कर रहे श्री यू.के. सक्सेना ने अध्यक्षीय संबोधन में कहा कि सदस्य कार्यालयों के प्रमुखों/सदस्यों के सहयोग एवं समन्वय से नराकास की गतिविधियों को सुचारू रूप से संचालित किया जा सकता है। हम राजभाषा विभाग, भारत सरकार के द्वारा सौंपे गए दायित्व को सभी सदस्य संस्थानों के सहयोग से पूरा कर रहे हैं। उन्होंने बैठक में अनेक सदस्य संस्थानों की अनुपस्थिति को लेकर चिंता व्यक्त की। श्री आर.डी.ममगाई, उप प्रबंधक, जनसंपर्क/हिंदी ने सभी उपस्थित सदस्यों/प्रतिनिधि सदस्यों को अपना अमूल्य समय देने एवं उपस्थिति हेतु आभार व्यक्त किया।

संपादक के नाम पाती

दिनांक 28.09.2022 – सेवा में, श्री पंकज कुमार शर्मा जी, उप प्रबंधक (राजभाषा) टीएचडीसी इंडिया लि., ऋषिकेश – महोदय, टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड द्वारा प्रकाशित पत्रिका पहल प्राप्त हुई, एतदर्थ आपका सहृदय धन्यवाद। पत्रिका का कलेवर, सामग्री तथा साजसज्जा प्रशंसनीय है। इसके लिए आपको हार्दिक बधाई व शुभकामनाएं। सादर धन्यवाद।

डॉ यतीन्द्र कटारिया 'विद्यालंकार'
सदस्य, हिंदी सलाहकार समिति, विद्युत मंत्रालय, नई दिल्ली
गुरूद्वारा नुक्कड शिव मंदिर मार्ग, मौ.महादेव, मंडी धनौरा, अमरोहा(उ.प्र.)– 244231

दिनांक 27.09.2022– सेवा में, उप प्रबंधक (राजभाषा) एवं सचिव नराकास– महोदय, टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड के कारपोरेट कार्यालय, ऋषिकेश के द्वारा निगम के अधिकारियों एवं कर्मचारियों से राजभाषा हिंदी के प्रति प्रेरित एवं प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से नियमित रूप से राजभाषा गृह पत्रिका का प्रकाशन किया जा रहा है। इसकी एक प्रति हमारे कार्यालय को भी प्राप्त हुई है। इस हेतु आपका कोटिशः धन्यवाद, साधुवाद एवं आभार। हिंदी भाषा के प्रोत्साहन की दिशा में आपका यह अथक प्रयास प्रशंसनीय है। सधन्यवाद।

अनिल रावत
रक्षा लेखा सहायक नियंत्रक, बीईजी एवं केंद्र, रुड़की छावनी–247667

हास-परिहास

- वैलेंटाइन डे के सात दिन पहले एक गिफ्ट शॉप पर वकील साहब गए। उन्होंने चालीस खूबसूरत कार्ड ख़रीदे और सब पर उन्होंने भेजने वाले की जगह लिखा–"हैल्लो जान !! पहचान गए ना? शाम को मिलो, "आई लव यू"। दुकानदार ने पूछा – यह क्या मामला है ? वकील साहब ने समझाया–पिछले वैलेंटाइन डे पर आस–पास की कालोनी में ऐसे ही 20 कार्ड भेजे थे। कुछ ही दिन में तलाक के चार केस मिल गए थे। इस बार 40 कार्ड भेज रहा हूँ।
- जिंदगी में एक बात याद रखना, आँसू पोछने वाले बहुत मिलेंगे, पर नाक पोछने के लिए कोई नही आता, सर्दी शुरू हो गयी हैं, इसलिए अपना ध्यान रखना...
- पति ने पत्नी से कहा–अब तक खाना तैयार न हुआ हो, तो मैं होटल में खाना खाने जा रहा हूं। पत्नी ने कहा – आधे घंटे ठहर जाइए। पति ने पूछा – क्या तुम आधे घंटे में भोजन तैयार कर लोगी। पत्नी– नहीं, मैं भी आपके साथ ही चलने को सोच रही हूं।
- टीचर ने बच्चों से पूछा– वास्कोडिगामा भारत कब आया ? बिल्लू ने उत्तर दिया–जी सर्दियों में। टीचर– किसने कहा ? बिल्लू ने उत्तर दिया–सर मैंने बुक में फोटो देखी थी, उसने कोट पहन रखा था।
- जेलर ने कैदी से कहा – कल तुम्हें फांसी होने वाली है, यदि तुम्हारी कोई अंतिम इच्छा हो तो बताओ । कैदी ने तरबूज खाने की इच्छा जताई। जेलर ने कहा – लेकिन ये तरबूज का मौसम नहीं है। कैदी– कोई बात नहीं, मैं इंतजार कर लूंगा।
- एक मोटी औरत (दूसरी औरत से) – मेरे पास गाड़ी है, बंगला है, बैंक बैलेंस है, तेरे पास क्या है...? दूसरी औरत (बड़े ही शांत स्वर में) – मेरे पास 20 साल पहले शादी में सिलवाया हुआ सूट है, जो अभी भी मुझे फिट आता है।

- पप्पू परेशान होकर बड़बड़ा रहा था। बहुत साल पहले एक बाबा ने कहा था कि.... भगवान तुझे इतना देगा कि संभाला नहीं जाएगा। अब पता चला कि वो तो वजन की बात कर रहा था।
- लड़की को देखने आई हिंदी प्रेमी उसकी होने वाली सास – मैं हिंदी सुनकर ही यह तय करूंगी कि तुम मेरी बहु बनने लायक हो या नहीं। सास ने पूछा कि तुम्हारी शैक्षणिक योग्यता क्या है...? लड़की ने उत्तर दिया नेत्र–नेत्र चाय। सास ने पूछा – इसका क्या मतलब...? लड़की ने उत्तर दिया – आईआईटी।
- बीबी की बनाई सब्जी में पनीर नहीं मिलने पर पति ने हिम्मत कर के पूछा...क्या ये पनीर की सब्जी है ? पत्नी ने उत्तर दिया– चुपचाप खा लो, ''खोया पनीर'' है यह...!
- बंता – अगर तुम्हारी शादी एक जैसी दिखने वाली जुड़वा बहन से हो गई तो अपनी बीवी को कैसे पहचानोगे ? संता ने उत्तर दिया – सिंपल... मैं उसकी चोटी खीचूंगा...अगर गुर्राई तो बीवी...और मुस्कुराई तो साली...!!!
- एक बार एक पागल बिना जली बीड़ी पी रहा था। दूसरा पागल– यार बीड़ी से कोई धुंआ नहीं निकल रहा ?
- पहला पागल– कर दी न पागलों वाली बात, ये सी.एन.जी. बीड़ी है...।
- ठंड का समय था, जुड़वा बच्चे अपने कमरे में बैठे थे, एक हंस–हंस कर लोटपोट हो रहा था जबकि दूसरा उदास था। पिता ने कहा तुम इतना क्यों हंस रहे हो ? पहला बच्चा–मम्मी ने दोनों बार इसी को नहला दिया।

साहित्यकार परिचय

गजानन माधव मुक्तिबोध

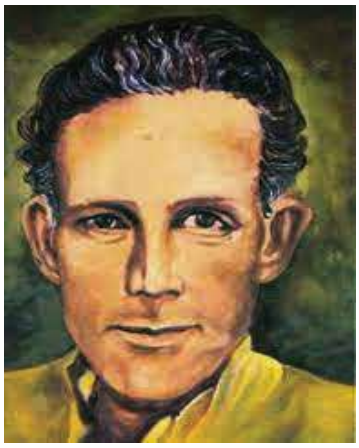

प्रगतिवाद के प्रखर और मौलिक चिंतक आलोचकों में मुक्तिबोध का नाम सर्वाधिक प्रमुख है। उनका कहना है कि कविता वैयक्तिक प्रयास कम सांस्कृतिक प्रक्रिया है। वे कहानीकार भी थे और समीक्षक भी। मराठी भाषी हिंदी कवि गजानन माधव मुक्तिबोध का जन्म 13 नवम्बर, 1917 को मुरैना जिले शिवपुरी, ग्वालियर, मध्य प्रदेश में हुआ था । उनके पिता पुलिस विभाग में इंस्पेक्टर थे और उनका तबादला प्रायः होता रहता था इसलिए मुक्तिबोध की पढ़ाई में बाधा पड़ती रहती थी। नागपुर विश्वविद्यालय से उन्होंने हिंदी में एम.ए. किया। लंबी कविताएं लिखने वाले कवि मुक्तिबोध की बहुत कम आयु मात्र 47 वर्ष में ही 11 सितम्बर, 1964 को मृत्यु हुई।

मुक्तिबोध घुमक्कड़ प्रकृति के थे । उनकी कविताओं में बावड़ी, पुराने कुएं, वीरान खण्डहर, पठार, बरगद आदि अनेक शब्द बार–बार आते हैं। वे अपनी लंबी कविताओं के लिए प्रसिद्ध थे। उन्होंने निबंध, कहानियां तथा समीक्षाएं भी लिखी । मुक्तिबोध तारसप्तक के पहले कवि थे। श्रीकांत वर्मा ने 'चाँद का मुंह टेढ़ा है' काव्य संग्रह के प्रथम संस्करण में लिखा है, 'किसी और कवि की कविताएं उनका इतिहास न हो, मुक्तिबोध की कविताएं अवश्य उनका इतिहास है, जो इन कविताओं को समझेंगे उन्हें मुक्तिबोध को किसी और रूप में समझने की जरूरत नहीं पड़ेगी। शमशेर बहादुर सिंह का कहना था, ''किसी ने मुक्तिबोध की एक बरगद से तुलना की है, जो अवश्य ही उनकी एक प्रिय इमेज है । मगर यह बरगद नहीं, चट्टान है।''

प्रमुख रचनाएं -

काव्य – चाँद का मुंह टेढ़ा है, भूरी–भूरी खाक धूल, तारसप्तक में रचनाएं प्रकाशित।

आलोचना – नयी कविता का आत्मसंघर्ष, कामायनी एक पुनर्विचार, समीक्षा की समस्याएं, नए साहित्य का सौन्दर्यशास्त्र

कहानी – काठ का सपना, सतह से उठता आदमी

उपन्यास – विपात्र

आत्माख्यान – एक साहित्यिक की डायरी

इतिहास – भारतः इतिहास और संस्कृति

रचनावली – मुक्तिबोध रचनावली (सात खंड)

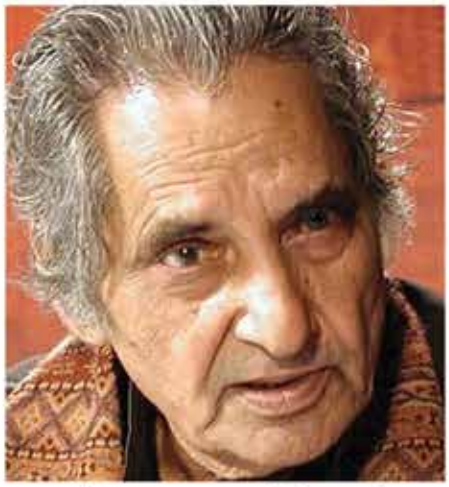

गोपालदास 'नीरज'

(04 जनवरी, 1925 – 19 जुलाई, 2018)
पद्म श्री एवं पद्म भूषण से सम्मानित

"जलाओ दिये पर रहे ध्यान इतना,
अंधेरा धरा पर कहीं रह न जाए।
नई ज्योति के धर नए पंख झिलमिल,
उड़े मर्त्य मिट्टी गगन स्वर्ग छू ले,
लगे रोशनी की झड़ी झूम ऐसी,
निशा की गली में तिमिर राह भूले,
खुले मुक्ति का वह किरण द्वार जगमग,
ऊषा जा न पाए, निशा आ ना पाए,
जलाओ दिए पर रहे ध्यान इतना,
अंधेरा धरा पर कहीं रह न जाए।"

टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड
THDC INDIA LIMITED
(भारत सरकार एवं उत्तर प्रदेश सरकार का संयुक्त उपक्रम)

गंगा भवन, प्रगतिपुरम, बाईपास रोड, ऋषिकेश–249201 (उत्तराखंड)
दूरभाष: 0135–2473614, वेबसाइट: http://www.thdc.co.in
श्री पंकज कुमार शर्मा, उप प्रबंधक (हिंदी) द्वारा टीएचडीसी इंडिया लि. के लिए प्रकाशित
(निःशुल्क आंतरिक वितरण के लिए)

www.paromita.org